

बाल विकास

प्रत्येक बच्चे के विकास की विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं। इसी अवस्थाओं में बच्चों का निश्चित विकास होता है। इसी सीमा का ध्यान रखते हुए विकास को निम्नलिखित चरणों में विभाजित करने का प्रयास किया गया है।

- 1 - गर्भावस्था → गर्भाधान से जन्म तक
- 2 - शैशवावस्था → जन्म से 6 वर्ष तक
- 3 - बाल्यावस्था → 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
- 4 - किशोरावस्था → 12 से 18 वर्ष तक
- 5 - युवावस्था → 18 वर्ष से 25 वर्ष तक
- 6 - प्रौढ़ावस्था → 25 वर्ष से 55 वर्ष तक
- 7 - वृद्धावस्था → 55 वर्ष से मृत्यु तक

→ इस समय अधिकतर विद्वान मानव-विकास का अध्ययन निम्नलिखित चार अवस्थाओं के अन्तर्गत करते हैं।

- 1 - शैशवावस्था → जन्म से 6 वर्ष तक
- 2 - बाल्यावस्था → 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
- 3 - किशोरावस्था → 12 वर्ष से 18 वर्ष तक
- 4 - प्रौढ़ावस्था → 18 वर्ष से मृत्यु तक

(1) - शैशवावस्था (जन्म से 6 वर्ष तक)

→ श्रमक

- इस अवस्था को भावी जीवन की आधारशिला के रूप में देखा जाता है।
- इस अवस्था में व्यवहार पूरी तरह मूल प्रवृत्तियों से जुड़ा रहता है। जितनी संतुष्टी वह तुरन्त चाहता है।
- सुख की चाह उसका एकमात्र प्रेरक होता है। वह हर उस कार्य से बचना चाहता है जो उसे कष्ट पहुँचाता है।

सामाजिक लक्षण - अन्य लक्षण - ① शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है ② बिशु शारीरिक तथ्यों के दृष्टि से अनिश्चित होता है। ③ बिशु की सामाजिक क्रियाओं के अन्तर्गत ध्यान, स्मृति, कल्पना, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण आदि का विकास तेज से होता है। ④ बिशु सबसे अधिक और जल्दी अनुकरण विधि से सिखाता है।

(2)- बाल्यावस्था (6 वर्ष से 12 वर्ष)

— फ्रायड

- 1- इस अवस्था को मानव विकास का अनोखा काल कहा है। क्योंकि विकास की दृष्टि से यह एक जटिल अवस्था है।
 - 2- इस अवस्था में विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक परिवर्तन बालक में होते हैं।
 - 3- पूर्वबाल्याकाल — पूर्व-बाल्याकाल में बालक तेजी से बढ़ता है।
उत्तर-बाल्याकाल — उत्तर-बाल्याकाल में उसके विकास में स्थायित्व आ जाता है।
 - 4- फ्रायड के अनुसार इस अवस्था में बालक में तनाव की स्थिति समाप्त हो जाती है तथा वह बाहर की दुनिया को समझने लगता है। लेकिन वह परिपक्व नहीं होता है।
 - 5- बाल्यावस्था को डी हम (Elementary School Age) या (Smart Age) स्मृति आयु या Dirty Age (गंदी अवस्था) आदि विभिन्न नामों से जानते हैं।
- सामाजिक लक्षण/अन्य लक्षण :- 1- बच्चों में रचनात्मक कार्यों में विशेष आनन्द मिलता है। 2- रचनात्मक प्रवृत्ति के साथ-साथ व्यंग्य करने की प्रवृत्ति भी जाग्रत होता है। 3- इस अवस्था में बच्चों में सामूहिक खेलों में भाग लेने की प्रवृत्ति बहुत अधिक विकसित हो जाती है।

(3) किशोरावस्था (Teen Age) - (12 से 18 वर्ष तक)

- 1- स्टेन्ली हॉल ने इस काल को तूफान एवं परेशानी का काल कहा है।
 - 2- पश्चिमी विद्वानों ने इसे (Teen Age) भी कहा है।
 - 3- इस अवस्था में किशोरों को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता रखती है।
 - 4- यह विकास की सबसे जटिल अवस्था मानी जाती है।
 - 5- इस काल में विशेषकर यौन दृष्टि से इस काल में अनेक परिवर्तन होते हैं। जिसकी वजह से किशोरों का जीवन तनाव, चिन्ता, संघर्ष आदि से घिर जाता है।
- सामाजिक लक्षण/अन्य लक्षण :- 1- बच्चों के अस्तित्व का लगभग सभी विषयों में परिवर्तन तीव्रता से होता है। 2- इस अवस्था में बुद्धि, कल्पना तथा तर्क शक्तियाँ पर्याप्त विकसित हो जाती हैं। 3- किशोरों में स्थायित्व और समायोजन का अभाव रहता है। उसका मन शिथिल के समान स्थिर नहीं होता है। वातावरण से समायोजन नहीं कर पाता है।

(4) प्रौढ़ावस्था (18 से)

- 1- इस अवस्था में किशोरावस्था धीरे-धीरे प्रौढ़ता या परिपक्वता की ओर बढ़ता है।
- 2- इस अवस्था में व्यक्ति दुनियाँ में प्रवेश करके अपने दायित्वों के प्रति जागरूक हो जाता है।
- 3- संक्षेप में यह आयु 'Teens' की समाप्ति तथा 'Twenties' का प्रारम्भ है।

बालविकास के सिद्धान्त

- 1- अभिवृद्धि एवं 'विकास' ये दोनों शब्द प्रायः एक ही अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं। किन्तु मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इनमें कुछ अन्तर होता है।
- 2- सोरेन्सन के अनुसार — "आवृद्धि शब्द का प्रयोग प्रायः शरीर तथा अंगों के आर तथा आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है।

1- बाल विकास के सामान्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं।

- | | |
|---|---|
| 1- निरन्तरता का सिद्धान्त | 9- परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त |
| 2- वैयक्तिक अन्तर का सिद्धान्त | 10- विकास की क्रिया का सिद्धान्त |
| 3- विकास क्रम की स्वरूपता | 11- विकास सम्भवतः सीधा न होकर वृत्ताकार होता है। |
| 4- वृद्धि एवं विकास की गति की दर एक सी नहीं रहती। | 12- वृद्धि और विकास की क्रिया वैयक्तिक और वातावरण का संयुक्त परिणाम है। |
| 5- निश्चित तथा पूर्वकथनीय प्रवृत्ति का सिद्धान्त | 13- स्कीकरण का सिद्धान्त |
| 6- वैयक्तिक तथा वातावरण की अन्तःक्रिया का सिद्धान्त | 14- विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है। |
| 7- चक्राकार प्रगति का सिद्धान्त | 15- समन्वय का सिद्धान्त |

2- बाल विकास से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण सिद्धान्त (Imp)

- 1- पुनर्वसन सिद्धान्त — इस सिद्धान्त का प्रतिपादक — जान डोयल और नील मिलर के अनुसार — बच्चे जैसे-2 बड़े होते हैं विकास होता है। अधिगम करता जाता है।
- 2- इन्होंने बाल्यावस्था के अनुभवों को व्यक्त व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण कारकों के रूप में स्वीकार किया है।
- 3- इन्होंने अचेतक कारकों के अतिरिक्त चिन्ता तथा अधिगमित व्यक्तित्व के व्यक्तित्व गतिविधिता में बहुत महत्व है।
- 4- जैसे — नवजात शिशु का स्तनपान से सम्बन्धित अति व्यवहार इसकी भोजन की आवश्यकता के लिए अधिक समय तक पर्याप्त नहीं है। उसे भुख की आवश्यकता के लिए या पूर्ण करने के लिए कुछ अधिक स्तनपान के जटिल व्यवहारों को सीखना होता है।
- 5- इनके अनुसार अधिगम के चार महत्वपूर्ण अवस्था हैं।
1- अन्तर्निहित (अभिप्रेरण) 2- संकेत (इन्ट्रिप्स) 3- प्रत्युत्तर (स्वयं का व्यवहार) 4- पुनर्वसन (पुनर्कार)

बुद्धि निर्माण एवं बहुआयामी बुद्धि

1- बुद्धि (Intelligence)

- ↳ बुद्धि का वैज्ञानिक रूप सर्वप्रथम अमेरिकी मनोवैज्ञानिक Spearman ने 1904 में अपनी पुस्तक "The Nature of Intelligence and Principles of Cognition" में दिया है।

बैवेस्टर के अनुसार - "बुद्धि ज्ञान ग्रहण करने की व असको व्यवहार में लाने की योग्यता है।"

2- बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषा तथा स्वरूप/प्रकृति

- ↳ बुद्धि क्या है? इसका स्वरूप क्या है? इस सम्बन्ध में विज्ञानविदों और मनोवैज्ञानिकों में मतभेद रहा है। अतः बुद्धि की परिभाषा उनके लक्षणों/स्वरूप के आधार पर निम्नलिखित किया जा सकता है।

- (1) समस्या - समाधान की योग्यता (2) अमूर्त चिन्तन की योग्यता
(3) सीखने की योग्यता (4) - समायोजन की योग्यता (5) सम्मन्वित परिभाषा

(1) समस्या - समाधान की योग्यता

- (i) रेक्सनाइट के अनुसार - "बुद्धि वह योग्यता है जो लक्ष्यों की पूर्ति में तर्क करना तथा समस्या - समाधान के निमित्त हमारे मन में विचारों को जाग्रत करती है।"
(ii) बर्टे के अनुसार - "बुद्धि अच्छी तरह निर्णय करने, समझने तथा तर्क करने की योग्यता है।"

[2] - अमूर्त चिन्तन की योग्यता

- (i) विने के अनुसार - "किसी समस्या को समझना, उसके विषय में तर्क करना तथा किसी निश्चित निर्णय पर पहुँचना बुद्धि की आवश्यक क्रिया है।"
(ii) स्पीयरमैन के अनुसार - "बुद्धि साम्बन्धिक चिन्तन है।"
(iii) टर्मेन के अनुसार - "एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान है जिसमें अमूर्त चिन्तन करने की योग्यता रहता है।"

(2) सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त - इस सिद्धान्त के प्रतिपादक बंदुरा एवं वाल्टर्स हैं।

- ↳ बंदुरा ने एक प्रयोग में बच्चों को एक फिल्म दिखाई जिसमें एक व्यक्ति व्यर्थ के व्यवहार को प्रदर्शित किया गया था। फिल्म में तीन भाग थे - पहले बच्चों को केवल एक प्रकार की फिल्म दिखाई गई। पहली फिल्म में फिल्म का हीरो अक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करता था इस व्यवहार के लिए उसे तत्व दिया जाता था,
↳ दूसरी फिल्म में हीरो अक्रामक व्यवहार करता था इस अक्रामक व्यवहार के लिए उसे पुरस्कृत होता-था किया गया।
↳ तीसरी फिल्म में अक्रामक व्यवहार के लिए हीरो को न ही पुरस्कृत किया जाता था और न ही दण्डित किया जाता था
↳ इन परिस्थितियों में रखकर बच्चों के व्यवहार का निरीक्षण कर देखा गया कि बच्चों ने इस व्यवहार का अनुकरण अपेक्षाकृत कम किया जो हीरो के अक्रामक व्यवहार और दण्ड से सम्बन्धित था

Questions

- (1) बुद्धि का पूर्ण विकास 14 से 16 वर्ष के बीच माना है - टर्मेन, जोन्स, कोनर्स एवं स्पीयरमैन
(2) बुद्धि में प्रवृत्ता का विकास ही सम्भव है - मनोशास्त्रियों के अनुसार

[3]- सीखने की योग्यता :-

- मैन्डूगल के अनुसार - "बुद्धि जन्मजात प्रवृत्ति को अतीत के अनुभव के प्रकाश में सुधारने की योग्यता है।"
- डियरबोर्न के अनुसार - "बुद्धि सीखने या अनुभव का लाभ उठाने की योग्यता है।"
- वर्किंगम के अनुसार - "सीखने की योग्यता बुद्धि है।"

[4]- समायोजन की योग्यता

- कालविन - "एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धि प्रकट करता है जिस अनुपात में वह अपने नए वातावरण में समायोजित होने की क्रिया सीख चुका है या सीख सकता है।"
- क्रूप - बुद्धि नवीन एवं विभिन्न परिस्थितियों में अपने विचारों को समायोजित करने की योग्यता है।
- बर्ट - सचेतनता नवीन परिस्थितियों में अपने समायोजित करने की योग्यता को बुद्धि कहते हैं।
- स्टर्न - "नवीन परिस्थितियों में अपने विचारों को समायोजित करने की क्षमता बुद्धि है।"

[5]- सभन्वित परिभाषा -

- रेक्सनाइट - बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसेके द्वारा हम किसी उद्देश्य की पूर्ति या किसी समस्या का समाधान करने के लिए सम्बन्धित वस्तुओं एवं विचारों को सोचते हैं।
- वेक्सलर - बुद्धि व्यक्ति की सम्पूर्ण क्षमताओं का योग या सार्वभौमिक योग्यता है। जिसेके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है। तर्कपूर्ण ढंग से सोचता है। तथा प्रभावपूर्ण ढंग से वातावरण के साथ सम्पर्क स्थापित करता है।

बुद्धि के सिद्धान्त (Imp)

Sr No	प्रमुख सिद्धान्त	प्रतिपादक
1	एक कारक (Uni-factor) सिद्धान्त (Imp)	विने, टरमन, तथा स्टर्न ✓
2	द्वि कारक (Two-factor) सिद्धान्त (Imp)	स्पीयरमैन ✓
3	बहु कारक (Multi-factor) सिद्धान्त (Imp)	थॉर्नडाइक ✓
4	समूह कारक (Group-factor) सिद्धान्त (Imp)	थर्सटन ✓
5	पदानुक्रमिक (Hierarchical) सिद्धान्त	फिलिप वर्नन
6	त्रिमायामी (Three-Dimensional) सिद्धान्त	जे.पी. गिलफोर्ड
7	तत्त्व ठोस (Fluid-Crystallized) बुद्धि सिद्धान्त	आर.बी. कैटल ✓
8	बहु बुद्धि (Multiple) सिद्धान्त	होवर्ड गार्डनर ✓
9	संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त (Imp)	जीन पियाजे ✓
10	त्रितन्त्र (Triarchic) सिद्धान्त (Imp)	रॉबर्ट स्टैनबर्ग ✓
11		
12		

अन्य परिभाषाएँ

- वुडवर्थ (Woodworth) - "बुद्धि कार्य करने की एक विधि है।"
- वुडरो (Woodrow) - "बुद्धि ज्ञान का अर्जन करने की क्षमता है।"
- गाल्टन (Galton) - "बुद्धि पहचानने तथा सीखने की क्षमता है।"
- थॉर्नडाइक (Thorndike) - "वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार अपेक्षित प्रतिक्रिया की योग्यता ही बुद्धि है।"

Observations

- समूहकारक कारक सिद्धान्त को संज्ञात्मक सिद्धान्त भी कहते हैं।
- बहुकारक सिद्धान्त को अस्तित्व/बहुव्यक्ति सिद्धान्त आदि नामों से भी जानते हैं।
- पदानुक्रम सिद्धान्त को क्रमिक महत्व का सिद्धान्त भी कहते हैं।
- द्विकारक सिद्धान्त के दो कारक हैं। ① ल कारक ② S कारक
- एक कारक को स्काई का सिद्धान्त/एक सत्तात्मक सिद्धान्त के नाम से जानते हैं।

बुद्धि लाब्धि एवं उसका मापन INTELLIGENCE QUOTIENT AND ITS MEASUREMENT

- बुद्धि-लाब्धि वालक में स्थित बुद्धि की मात्रा का मापन है।
 • टरमैन ने मानसिक आयु के बदले बुद्धि-लाब्धि की विधि खोजी और खूब निकाला।

$$\text{बुद्धि लाब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.)}}{\text{वास्तविक आयु (C.A.)}} \times 100$$

$$\boxed{\text{I.Q.} = \frac{\text{M.A.} \times 100}{\text{C.A.}}}$$

Where M.A. = Mental Age
C.A. = Chronological Age

Ex:- यदि बालक की वास्तविक आयु 8 वर्ष है और वह 10 वर्ष के सामान्य बालक का कार्य पूर्ण कर लेता है। तो उसकी मानसिक आयु 10 वर्ष होगी।

$$\text{I.Q.} = \frac{10 \times 100}{8} = 125$$

बुद्धि लाब्धि	टरमैन के द्वारा प्रतिभा/वर्ग	बुद्धि लाब्धि	डा० कामथ के द्वारा प्रतिभा	प्रतिशत
140 से ऊपर	प्रतिभाशाली (Genius)	140 से ऊपर	प्रतिभाशाली	0.5
120-139	बहुत अच्छे (Very Superior)	130 से 139.5	असामान्य	3.5
110-119	अच्छे (Superior)	120-129.5	अत्यन्त उच्च	9.0
90-109	उत्कृष्ट	110-119.5	उच्च	15.0
80-89	सामान्य	90-109.5	सामान्य	42.0
70-79	मंद	80-99.5	पिछड़े	15.0
60-69	निर्बल बुद्धि	70-79.5	अति पिछड़े	9.0
50-59	हीन बुद्धि	60-69.5	सीमा पर	3.5
25-49	मूर्ख	50-59.5	मूर्ख	1.5
0-24	जड़	40-49.5	मंद बुद्धि	0.5
		30 से नीचे	अज्ञान	

Note:- तरमैन के विकसित I.Q. विवरण आपने देखा यहाँ नीचे स्टेनफोर्ड-विने परीक्षण पर मैरिल (1938) तथा वेब्लर (1955) एडल्ट इण्टेलिजेंस टेस्ट के I.Q. का विवरण निचे दिया है।

I.Q. विवरण वेब्लर के अनुसार		I.Q. विवरण मैरिल के अनुसार	
I.Q.	विवरण	I.Q.	विवरण
130 या अधिक	अति श्रेष्ठ (प्रतिभाशाली)	140 या अधिक	अति श्रेष्ठ (प्रतिभाशाली)
120-129	श्रेष्ठ बुद्धि	120-139	श्रेष्ठ बुद्धि
110-119	उच्च सामान्य बुद्धि	110-119	उच्च सामान्य बुद्धि
90-109	सामान्य बुद्धि	90-109	सामान्य बुद्धि
80-89	मंद बुद्धि	80-89	मंद बुद्धि
70-79	क्षीण बुद्धि	70-79	क्षीण बुद्धि
70 से नीचे	निश्चित क्षीण बुद्धि	70 से नीचे	निश्चित क्षीण बुद्धि

Note (Imp):- कर्ट ने अपनी पुस्तक "मानसिक तथा शिक्षा लाब्धि परीक्षण" में बुद्धि के आधार पर वर्गीकरण तथा शिक्षा की आयु एवं शिक्षा लाब्धि को स्पष्ट किया।

* { बुद्धि का परीक्षण
Intelligence Test } *

- बुद्धि को मापने के लिए सन् 1911 में विने (Binet) तथा साइमन (Simon) ने मिलकर एक परीक्षण पत्रक तैयार किया।
 → सन् 1915-1916 में क्रमशः वर्ट तथा टरमैन ने विने प्रश्नावली में संशोधन किया।
 → टरमैन ने बुद्धि लाब्धि का मान निकाला। विने ने बुद्धि मापन का मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया।
 → उन्होंने कहा कि मस्तिष्क की विभिन्न शक्तियाँ परस्पर गुपी हुई हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने तीन विशेषताओं-
 (1) प्रयोजन (purposefulness)
 (2) नयी परिस्थिति में अपने को लक्ष्य करने की योग्यता (Capacity to make adaptation)

बुद्धि परीक्षण के प्रकार

(1) व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण (Individual Intelligence Test)

- * इसमें 36 प्रश्न होते हैं।
- * यह $1\frac{1}{2}$ वर्ष $5\frac{1}{2}$ वर्ष के बच्चों के लिए है।
- * इन परीक्षणों में भाषा का प्रयोग नहीं होता है।
- * एक समय में एक ही व्यक्ति की परीक्षा की जाती है।

(2) सामूहिक बुद्धि परीक्षण (Group Intelligence Test)

- * प्रथम विश्व युद्ध के समय (1914-1918) में सेना भर्ती के लिए किया गया था।
- * सामूहिक परीक्षा के लिए विने एवं टर्मेन के बुद्धि परीक्षण सिद्धान्तों को स्वीकार ले किया गया परन्तु उनके आधार पर अलग से परीक्षाएँ निर्मित की गयीं।

(A) शब्दात्मक बुद्धि परीक्षण { Group Verbal test of Intelligence }

(B) अशब्दात्मक बुद्धि परीक्षण { Non-verbal test of Intelligence }

(3) क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण (4) समय-सीमा युक्त परीक्षण (5) समय-सिमा रहित परीक्षण

- * इसके माध्यम से उन व्यक्तियों का परीक्षण किया जाता जो भाषा प्रयोग नहीं कर सकते जैसे - बूढ़े, बहरे, अन्धे तथा अक्षिप्त व्यक्ति।
- * अतः क्रियात्मक परीक्षण इस प्रकार के लोगों के लिए उपयुक्त।

- (A) आकृति फलक परीक्षण (Form board Test)
- (B) चित्रांकन परीक्षण (Picture drawing test)
- (C) चित्रपूर्ति परीक्षण (Picture Completion test)
- (D) वस्तु संयोजन परीक्षण (Object Assembly test)
- (E) भूल-भुलैया परीक्षण (Maze test)

कुछ अन्य बुद्धि परीक्षण (Imp) Most important

(1) व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण

- वेथल्ट-बैलेविन इन्टेलीजेन्स टेस्ट } 10 वर्ष तक
- डायन्स एमेन टेस्ट
- भारिया का निष्पादन परीक्षण
- कोहलर का ब्लॉक डिजायन टेस्ट
- आर्थर का निष्पादन परीक्षण
- एलेक्जेंडर का पास खलांग परीक्षण

(A) सामूहिक शब्दात्मक बुद्धि परीक्षण

- अमेरिका में - आर्मी अल्फा परीक्षण, थॉर्नडायक का CAVD परीक्षण, टर्मेन।
- मेकनेयर सामूहिक परीक्षण,
- भारत में - डॉ. जलोटा ने (1932) में, डॉ. मोरे ने (1921), डॉ. सी. एच. रॉस एवं डॉ. भारिया ने कार्यात्मक पत्रक तैयार किया।
- 1 → सामूहिक बुद्धि परीक्षण (12-18 वर्ष तक) - निर्माणकर्ता पी. मैला
- 2 → साधारण मानसिक योग्यता (12-16 वर्ष तक) - एस. जलोटा
- 3 → शब्दात्मक वैश्विक परीक्षण (VIII, X एवं XI स्तर) - V.P. लूरो व Psychology
- 4 → टेस्ट आफ जनरल मेण्डल एबिलिटी (10 से 16 वर्ष तक) - शिक्षा विभाग गोरखपुर
- 5 → CIE शब्दात्मक सामूहिक परीक्षण (11 से 14 वर्ष तक) - CIE-Delhi

(B) सामूहिक अशब्दात्मक बुद्धि परीक्षण

- आर्मी बीटा परीक्षण
- शिकागो अशब्दात्मक परीक्षण भाग-1
- पिजन अशब्दात्मक परीक्षण A.E.P. 70/23
- रैवन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज परीक्षण

(A) - आकृति फलक परीक्षण

- त्रिभुजाकार
- गोलाकार
- अर्द्धगोलाकार
- चतुर्भुजीय
- त्रिकोणीय

बुद्धि परीक्षणों के गुण या विशेषताएँ

1. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)
2. विश्वसनीयता (Reliability)
3. वैधता (Validity)
4. स्वीकार्यता (Acceptability)
5. प्रतिनिधित्वता (Representativeness)
6. मूल्यांकन में सुविधा (Ease in Evaluation)
7. किंमतमयी (Economical)
8. व्यापकता (Comprehensiveness)
9. व्यावहारिकता तथा रोचकता (Practicable and Interesting)

बुद्धि परीक्षणों के दोष

1. विश्वसनीयता का अभाव (Lack of Reliability)
2. व्यापकता का अभाव (Lack of Comprehensiveness)
3. प्रमाणीयता का अभाव (Lack of Authentication)
4. मतभेद (View difference)
5. ज्ञानों का अभाव (Lack of Knowledge)
6. अनुमान का प्रदर्शन (Exhibition of Guess Work)

बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता

1. छात्र वर्गीकरण (Student Classification)
2. शैक्षणिक मार्ग-दर्शन (Educational Guidance)
3. जीवन शिक्षा में उपयोगिता (Useful in life education)
4. छात्र-चयन में उपयोगिता (Useful in student selection)
- (a) प्रवेश (b) छात्रवृत्ति (c) विज्ञान योग्यता)
5. अध्यापन प्रणाली में उपयोगिता (Useful in teaching process)
6. व्यावसायिक मार्ग-दर्शन (Vocational Guidance)
7. अनुसन्धान (Research)

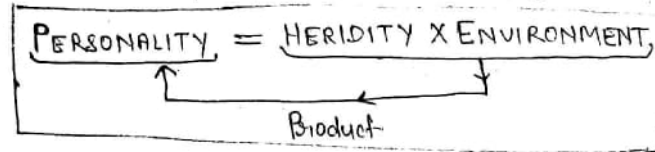
Important Point

www.TETForum.com

PERSONALITY - अर्थ

Persona = Mask (मुखौटा)

⇒



MEANING AND CONCEPT OF PERSONALITY

व्यक्तित्व की अवधारणा एवं अर्थ

- [1] - मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण (फ्रायड) - इसके जन्म-कला फ्रायड हैं जिन्होंने व्यक्तित्व को तीन भागों में बांटा है।
- (a) इदम (Id) :- व्यक्ति की मूल प्रवृत्ति और प्राकृतिक इच्छा निर्दिष्ट हैं। इदम मन में स्थित प्रकृतिक शक्तियाँ हैं जो अचेत या अज्ञान की अवस्था में मृत हैं।
- (b) अहम (Ego) :- इसका सम्बन्ध इद (Id) और अहम (Ego) दोनों से होता है। इसमें चेतना, इच्छाशक्ति, बुद्धि तथा तर्क का समावेश होता है।
- (c) परम अहम (Super Ego) :- यह व्यक्ति आदर्श तथा नैतिक मन होता है जो सुख, क्षणिक सुख और भौतिकता से संचारित न होकर यथार्थता से संचालित होता है अर्थात् जिस व्यक्ति का Super Ego जितना अधिक होगा उसका व्यक्तित्व उतना ही अधिक होगा।

[2] - मनोविद या मनोवैज्ञानिक के अनुसार - व्यक्तित्व में वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों को महत्व प्रदान करता है। (मार्टन, एडवर्थ)

- [3] - दार्शनिक दृष्टिकोण से - व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के आत्मज्ञान से है।
- [4] - समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से - व्यक्तित्व संस्कृति का वैयक्तिक पक्ष है तथा व्यक्ति पर एक सामाजिक प्रभाव होता है (फारिस)
- [5] - व्यवहारिक दृष्टिकोण से - व्यक्तित्व का अर्थ किसी व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण ही व्यक्तित्व है।

DEFINITION OF PERSONALITY

- [1] अलपोर्ट (Allport) :- "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोवैज्ञानिक गुणों का वास्तविक संश्लेषण है जो परिवेश के प्रति होने वाले उसके संपूर्ण अभियोजन का निर्णय करता है" "Personality is the dynamic organization with in the individual of those psychological systems that determine his unique adjustment to his environment"
- [2] गिलफोर्ड (Guilford) :- "Personality is an integrated trends"
- [3] - वोरिंग - "व्यक्तित्व वातावरण के साथ सम्बन्ध एवं स्थाई समायोजन करने का प्रतिक्रिया है।"
- [4] - वाटसन (Watson) - "हम जो कुछ करते हैं वही व्यक्तित्व है"
- [5] मार्टन प्रिंस (Mortimer Prince) - "व्यक्तित्व समस्त शारीरिक तथा अजित वृत्तियों का योग है।" "Personality is the sum of total of all the biological & innate and acquired tendencies"

IMPORTANT POINT

www.TETForum.com

TYPES OF PERSONALITY

✶ फ्रेडमर (Kjeschmer) → (a) पिकनिक (Picnic) (b) एस्थेनिक (Asthenic)
(शरीर संरचना) (c) एथेलेटिक (Athletic) (d) डिस्प्लास्टिक (Dysplastic)

- फ्रेडमर ने यह निष्कर्ष निकाला कि एस्थेनिक, एथेलेटिक शारीरिक रचना वाले व्यक्ति क्षमता, अकेले रहने तथा संवेदनशील होते हैं। वे सामाजिक सम्पर्कों से अलग रहते हैं। दिवास्वप्न में अधिक समय बिताते हैं।
- पिकनिक प्रकार के लोग वातुनी, दयालु तथा सामाजिक सम्पर्क रखने वाले होते हैं।

✶ कपिल मुनि → (a) रजोगुण (b) महा तम (तमोगुण)
(स्वभाव)

✶ थार्नडाईक → (a) शूद्रम (b) प्रयज्ञ (c) स्थूल
(चिन्तन)

✶ युंग (मनोविश्लेषणवादी) → (a) अन्तर्मुखी (b) बहिर्मुखी (c) उभयमुखी
(मनोविज्ञान)

- युंग के इस सिद्धान्त को सार्वमान्य सिद्धान्त भी कहते हैं।
- अन्तर्मुखी व्यक्ति चिन्तनशील होते हैं अपनी ओर केन्द्रित रहते हैं। कर्तव्यपरायण होते हैं, प्रतिक्रियावादी तथा कष्टों के प्रति सजग रहते हैं।
- बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति रूचि बाह्य जगत में होती है। व्यापारिक विषयों में रूचि नहीं होती है।
- उभयमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति जो दोनों का समिश्रण होते हैं उन्हें उभयमुखी या विकासोन्मुखी कहते हैं।

↳ शेल्डन → (a) एण्डोमर्फिक (b) मेसोमर्फिक (c) एक्टोमर्फिक

↳ विलियम जेम्स → (a) कोमल हृदय वाला (b) कठोर हृदय वाला

✶ न्यूमैन तथा स्टर्न → (a) विश्लेषणात्मक (b) संश्लेषणात्मक

↳ शेल्डन → (a) कोमल एवं गोलाकार (b) आयताकार (c) लम्बाकार

↳ आधुनिक वर्गीकरण → (a) भावुक (b) कर्मशील (c) विचारशील

MEASUREMENT OF PERSONALITY

(1) Non-Projective Methods

(2) Projective Methods

(A) Subjective Methods
(आत्मनिष्ठ विधियाँ)

- 1 → साक्षात्कार विधि (Interview Method)
- 2 → आत्मकथा विधि (Autobiography)
- 3 → जीवन इतिहास विधि (Case history Method)
- 4 → अवलोकन या सूची विधि या प्रश्नावली विधि
(Observation Inventory Questioning Method)

(B) Objective Method
वस्तुनिष्ठ विधियाँ

- (1) Rating Scale (निर्धारण मापनी)
 - Checklist
 - अंकिक मापनी
 - Graphical मापनी
 - क्रमिक मापनी
 - वाक्य चयन मापनी
 - स्थिति मापनी
- (2) Inventory or Questionnaire
(सूची विधि या प्रश्नावली विधि)
- (3) Situation Test

- ↳ (a) Sociometry (समाजमिति)
- ↳ (b) Psychodrama (मनोअभिनय)

(2) Projective Method

1. Associative Technique (साहचर्य तकनीक)
2. Constructional Technique (रचना " ")
3. Completion Technique (पूर्ति " ")
4. Ordering Technique (क्रम " ")
5. Expression Technique (अभिव्यक्ति " ")

Main Point

- ↳ Rating Scale की शुरुआत फ्रेडमर महोदय ने किया लेकिन इसके प्रकाशन का वास्तविक श्रेय गाल्टन महोदय को जाता है।

↳

↳

Most Important Methods

Ss No	METHODS	SCIENTIST	DISCRIPTION (विवरण)
	I.B.T. (Ink-Block Test) (रंगब्लॉक परीक्षण)	हरमन रोसार्क (Herman Roschach)	→ इसमें 10 स्क्वायर के धब्बे प्रयोग होता था → 5- (काले रंग के), 2- (धूसर रंग के धब्बे) → 3 (काले तथा लाल पूर्ण रूप से रंगदार थे) → मूल्यांकन - (1) स्थायी निर्वर्ण (2) निर्वर्ण (3) विषय बद्ध
	T.A.T (Thematic Apperception Test) (उपसंगोचक)	Mare & Morgan (मारे, मॉर्गन) (1935) ई०	→ इसमें कुल 30 कार्डों का प्रयोग किया गया तथा एक दूसरे से भिन्न होते हैं → सिर्फ 1 कार्ड पर कोई चित्र नहीं होता है → पूरे परीक्षण में 20 चित्रों का प्रयोग किया जाता है
	C.A.T (Child-Apperception Test)	Leopold Bailok (लियोपोल्ड बैलोक)	→ इसमें 10 कार्ड होते हैं जिसपर जानवरों चित्र होता है।
	S.A.T (Sentence Apperception Test)	Leopold Bailok (लियोपोल्ड बैलोक)	→ इसमें अधूरी कहानी होती है जैसे - मेरा जी चाहता है मैं नयी मे- - - - ? को सम्पत्ती करना होता है।

→ Good Characteristic of Personality

- | | |
|----------------------------------|------------------------|
| 1 - शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य | 8 - ठोढ़ संकल्प शक्ति |
| 2 - आत्म चेतना | 9 - संतोष |
| 3 - सामाजिकता | 10 - उच्चों का भावना |
| 4 - समर्पणशीलता | 11 - उद्देश्यपूर्णता |
| 5 - सौम्य स्वरूप | 12 - विकास की निरंतरता |
| 6 - समग्रता | 13 - चारित्रिक पूर्णता |
| 7 - स्वीकृति | |

PLACE FOR 'U' FOR Question

[चिन्तन Thinking]

- ↳ चिन्तन एक मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणीयों में मिलित होती है। कुछ लोगों ने इसे वातावरण से मिलने वाली सूचनाओं का मानसिक जोड़-तोड़ बताया है तो
- ↳ किसी ने एक ऐसी मध्यस्त प्रक्रिया माना है जो किसी समस्या (उद्दीपन) तथा उसका समाधान यानी सही अनुक्रिया के मध्य या बीच में होती है।

सिल्वरमैन — चिन्तन एक ऐसी प्रक्रिया मानसिक प्रक्रिया है जो हमलोगों को उद्दीपन तथा घटनाओं के प्रतिफलमय चित्रण द्वारा किसी समस्या का समाधान करने में मदद करता है।

चिन्तन के उपकरण या साधन Sources or Instrument of Thinking

- (1) **प्रतिमाएँ (Image)** :- मानव अनुभव प्रतिमाओं के आधार पर व्यक्त होता है। हम जो देखते हैं (दृश्यप्रतिमा), सुनें (श्रवणप्रतिमा) जो करते हैं सभी का आधार में विकसित होकर प्रतिमा होती है।
- (2) **भाषा (Language)** :- चिन्तन करते समय व्यक्ति भाषा का प्रयोग करते हैं। अर्थात् हम अपने आप से बात करते हैं। इसलिए कहा गया है कि चिन्तन एक प्रकार की आन्तरिक भाषण है।
- (3) **समप्रत्यय (Concept)** :- चिन्तन में व्यक्ति भिन्न-2 तरह के समप्रत्यय का प्रयोग करते हैं। प्रत्येक वस्तु या घटना का एक समप्रत्यय व्यक्ति के मन में होता है। जो चिन्तन में मदद करता है।
- (4) **प्रतीक एवं चिह्न (Symbol and Sign)** :- वोरिंग, लैंगशील्ड एवं वेल्ले ने लिखा है — "प्रतीक एवं चिह्न मोहरे एवं गोरियाँ हैं। जिनके द्वारा चिन्तन का महान खेल खेला जाता है।"
- (5) **सूत्र (Formula)** :- हमारी प्राचीन परम्परा रही है कि हम ज्ञान को छोटे-छोटे सूत्रों में संक्षिप्त करके संचित करते हैं। इनमें गणित, विज्ञान के सूत्र आते हैं।

[चिन्तन के प्रकार Types of Thinking]

- (1) **स्वली चिन्तन (Aesthetic Thinking)**
- (2) **यथार्थवादी चिन्तन** — (a) अभिसारी चिन्तन या निगमनात्मक चिन्तन (Realistic Thinking) (b) सृजनात्मक चिन्तन (c) आलोचनात्मक चिन्तन
- (3) **मूर्त एवं अमूर्त चिन्तन**
- (4) **अपसारी एवं अभिसारी चिन्तन**

[1] **स्वली चिन्तन (Aesthetic Thinking)** :- स्वली चिन्तन कैसे चिन्तन को कहा जाता है। जिसमें व्यक्ति अपने काल्पनिक विचारों एवं इच्छाओं को व्यक्त करता है। स्वयं चित्र स्वली चिन्तन का उदाहरण है।

[2] **यथार्थवादी चिन्तन** — यथार्थवादी चिन्तन ऐसे चिन्तन को कहा जाता है जिसका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है।

[3] **अभिसारी चिन्तन या निगमनात्मक चिन्तन** — इस चिन्तन में कोई व्यक्ति दिये गये तथ्यों के आधार पर कोई दिये गये सही निष्कर्ष पर पहुँचता है। इस प्रकार की चिन्तन प्रक्रिया में किसी भी विषय पर रणनीति चिन्तन किया जाता है।

[4] **अपसारी चिन्तन** — अपसारी चिन्तन के अन्तर्गत व्यक्ति एक ही व्यवस्था का भिन्न-2 रूपों में चिन्तन करता है। इस चिन्तन के माध्यम से व्यक्ति एक ही समस्या का समाधान भिन्न-2 विधियों से करने पर विचार करता है।

(b) **सृजनात्मक चिन्तन** — इस तरह के चिन्तन में व्यक्ति दिये गये तथ्यों में अपनी ओर से कुछ नया जोड़कर निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है।

(c) **आलोचनात्मक चिन्तन** — इस तरह के चिन्तन में व्यक्ति किसी कला या तथ्य की सच्चाई को स्वीकार करने से पहले उसके गुण दोष की परख करता है।

[कल्पना Imagination]

कल्पना एक प्रमुख मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अतीत के अनुभूतियों को जिसके द्वारा पुनः-संयोजित कर एक नया रूप दिया जाता है। इस तरह कहा जा सकता है कि कल्पना एक मानसिक जोड़ तोड़ है।

MEANING

रायबर्न (Rayburn) :- "कल्पना वह क्षमता है। जिसके द्वारा हम अपनी प्रतिमाओं का नये प्रकार से प्रयोग करते हैं यह हमको पूर्व अनुभव द्वारा किसी-सेसी वस्तु का निर्माण करने में सहायता देती है जो पहले कभी नहीं थी।"

मैकडूगल :- "कल्पना दूरस्थ वस्तुओं के सम्बन्ध का चिन्तन है।"

[कल्पना की विशेषताएँ] - Important

- [1] → मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) :- कल्पना एक मानसिक प्रक्रिया है यह स्वतः ही चलती रहती है। जब तक हम मानसिक शक्तियों का प्रयोग नहीं करेंगे इसका कोई अर्थ नहीं होता है।
- [2] → पूर्व अनुभव (Previous Experience) :- कल्पना के लिए एक धरातल की आवश्यकता होती है। पूर्व अनुभव धरातल के रूप में कल्पना को सहायता देता है। अतः कल्पना का आधार पूर्व अनुभव है।
- [3] → प्रतिमा चयन (Image Selection) :- मानव मन वडा विचित्र है वह अपनी रुचि एवं पसंद के आधार पर उपरीपक्षों का चयन करता है और उनके प्रति प्रतिक्रिया करके मस्तिष्क में प्रतिमा के रूप में स्थायी बनाता है।
- [4] → सृजन शक्ति (Creative Power) - कल्पना का प्रारम्भ और अन्त सृजन के लिए होता है। जब हम किसी यथार्थ स्वरूप को मानव हित के लिए तैयार कर देते हैं या स्वरूप पहचान कर देते हैं तो वह सृजन कहलाता है।

कल्पना के प्रकार

→ विलियम मैकडूगल के अनुसार

(1) पुनरुत्पादक कल्पना (Reproductive Imagination)

(2) उत्पादक कल्पना (Productive Imagination)

→ (a) रचनात्मक कल्पना

→ (b) सृजनात्मक कल्पना / स्वभाविकता

→ जेम्स ड्रेवर के अनुसार

1- ग्राही कल्पना

5- सैद्धांतिक कल्पना

2- सृजनात्मक कल्पना

6- व्यवहारिक कल्पना

3- परिणामवादी कल्पना

7- कालात्मक कल्पना

4- सौन्दर्यवादी कल्पना

8- अनोखी कल्पना

[तर्क [ARGUMENTS]]

→ तर्क एक प्रकार का वास्तविक चिन्तन है क्योंकि तर्क के माध्यम से अपने चिन्तन को क्रमबद्ध बनाता है। तथा एक निश्चित निष्कर्ष से तर्क-विरक्त के आधार पर पहुँचता है। तर्क के स्वरूप के बारे में हमें निम्न तथ्य प्राप्त होते हैं।

- (1) तर्क चिन्तन की प्रक्रिया है।
- (2) तर्क में क्रमबद्धता पाई जाती है।
- (3) तर्क में व्यापक पक्ष-विपक्ष से तर्क करते हुए एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है।

→ [तर्क के महत्वपूर्ण कदम]

- 1- समस्या की पहचान
- 2- बाक्यों का संश्लेष
- 3- अनुमान पर पहुँचना
- 4- अनुमान के अनुसार प्रयोग
- 5- निर्णय करना

→ [तर्क के प्रकार]

- | | |
|--------------------|-------------------|
| 1- निगमनात्मक तर्क | 5- अनौपचारिक तर्क |
| 2- आगमनात्मक तर्क | 6- औपचारिक तर्क |
| 3- आलोचनात्मक तर्क | |
| 4- सावधानवाची तर्क | |

Most Important [अधिगम (सीखना) का अर्थ एवं सिद्धान्त] [MEANING AND PRINCIPLES OF LEARNING]

→ MEANING OF LEARNING

- (1) स्किनर (Skinner) :→ " सीखना व्यवहार में उत्तरेतर सामंजस्य की प्रक्रिया है "
- (2) गिलफोर्ड (Gillford) :→ " व्यवहार के कारण, व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है "
- (3) काल्विन (Calvin) :→ " पहले के निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा हुए परिवर्तन को अधिगम कहते हैं "

→ KINDS OF LEARNING

- (1) धानात्मक अधिगम (Cognitive Learning)
 - प्रत्यक्षतात्मक सिखना (Perceptual Learning)
 - प्रयात्मक सिखना (Conceptual Learning)
 - साहचर्यात्मक सिखना (Learning with Association)
- (2) संवेदनात्मक अधिगम (Emotional Learning) - तैरना, साहसिक चमत्कार
- (3) गामक अधिगम (Dynamic Learning) → देखना, सिखाना, बोलना, चलना

→ [अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ] [EFFECTIVE METHODS OF LEARNING]

- 1- करके सिखना (Learning by doing)
- 2- अनुकरण द्वारा सिखना
- 3- निरीक्षण द्वारा सिखना
- 4- परीक्षण करके सीखना
- 5- सामूहिक विधियों द्वारा सीखना
- 6- सम्मेलन एवं विचारगोष्ठी अधिगम
- 7- प्रयोजन विधि एवं समूह अधिगम

Most Important [व्यवहारवाद के नियम]

[A]- [अधिगम (सीखने) के मुख्य नियम] → थार्नडाइक
[Major Law of Learning]

Note → इसके प्रतिपादक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक - थार्नडाइक हैं

- थार्नडाइक का मानना है कि जब उद्दीपक और प्रतिक्रिया (सीखने वाला और क्रिया) के बीच सम्बन्ध उत्पन्न होने लगता है। तो दोनों में अनुबन्ध (Bond) स्थापित हो जाता है। यही अनुबन्ध (Bond) सीखना होता है।
- इसे थार्नडाइक का व्यवहारवाद के नियम से भी जानते हैं।

[1]- प्रभाव का नियम (Law of Effect)

[2]- तत्परता का नियम (Law of Readiness) } थार्नडाइक के सिखने के मुख्य नियम

[3]- अभ्यास का नियम (Law of Exercise)

→ (a) उपयोग का नियम (Law of Use)

→ (b) अनुप्रयोग का नियम (Law of non-use)

1- प्रभाव का नियम → जब हम कोई चीज सिखते हैं और उसके परिणाम से हमें सन्तोष होता है, सुख या प्रसन्नता होती है, तो हम सीखने की ओर तत्परता (क्षमता) से जुड़ते हैं। और जल्दी सीख लेते हैं।

2- तत्परता का नियम → सीखने की दशा में तंत्रिका तन्त्र में उद्दीपक और प्रतिक्रियाओं के बीच सम्पर्क बन जाता है। इन सम्पर्कों को (R-S) सूत्र द्वारा प्रस्तुत करते हैं। जब सीखने वाली सानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों में तत्परता उत्पन्न कर लेती है तो कार्य जल्दी से सिख लेते हैं।

3- अभ्यास का नियम → जब सीखने वाला सही प्रतिक्रिया का चयन करने के लिए बार-बार दोहराता है, तथा सीखने में उन्नति होती है तो इसे सीखने में अभ्यास कहा जाता है।

(a) उपयोग का नियम → जब उद्दीपक प्रतिक्रिया के रूप से कोई Bond बनाते हैं तो उसे उपयोग के नियम कहते हैं।

(b) अनुप्रयोग का नियम → जब उद्दीपक प्रतिक्रिया के परिवर्तन रूप से कोई Bond नहीं बनाता है, तो उसे अनुप्रयोग का नियम कहते हैं।

[B]- थार्नडाइक के अधिगम (सीखने) के गौण नियम (व्यवहारवाद के नियम)

- (1) बहुमनुष्रिया का नियम
- (2) मानसिक स्थिति का नियम
- (3) आंशिक क्रिया का नियम
- (4) आत्मीकरण का नियम
- (5) स्वाधर्च परिवर्तन का नियम

[C]- [अधिगम (सीखने) के सिद्धान्त]
[Theory (Principles) of Learning]

- 1- ~~सम्यक्~~ प्रपल और भूल का सिद्धान्त → स्वाधर्चवाद का सिद्धान्त
(Theory of Trial and Error)
- 2- सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त → व्यवहारवाद " " " "
(Conditioned Response Theory)
- 3- सूक्ष्म का सिद्धान्त → गैस्टाल्टवाद का सिद्धान्त
(Theory of Insight)
- 4- अनुकरण का सिद्धान्त → साधर्चवाद का सिद्धान्त

Questions for 'U'

www.TETForum.com

[1] व्यवहारवाद का सिद्धान्त } थार्नडाइक

थार्नडाइक का सिद्धान्त - सादृश्यवाद

प्रमल एवं भूल का सिद्धान्त (Trial And Error)

या सम्बन्धवाद का सिद्धान्त

या अनुबन्धन का सिद्धान्त (Bond Theory)

या हर्ष-दुःख का सिद्धान्त (Pleasure Pain Theory)

या संश्लेषवाद का सिद्धान्त

→ थार्नडाइक का प्रथम प्रयोग - झूठी विल्ली पर
थार्नडाइक का द्वितीय प्रयोग - चूहों पर

→ सिद्धान्त का सार - 'सफल प्रतिक्रियाओं के चुनाव के द्वारा सीखने की विधि'

→ Wood Worth (वुडवर्थ) → 'प्रयास और त्रुटि के अनन्त चक्रीय नवीन कार्य की सीखने के लिए इनके प्रयत्न करने पड़ते हैं। जिससे अधिकतम शक्ति होती है।'

→ नोट (Important Point)

→ थार्नडाइक ने समस्या वास्तविक वास्तविक पिन्ड में झूठी विल्ली को बतल दिया।

→ पिन्ड के बाहर मछली या मांस की तइतरी रख दी।

→ इस प्रकार से विल्ली को बाहर जाने के लिए 100 प्रयत्नों से गुजरना पड़ा।

[2] - { सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त } → आई.पी.० पवलाव
Conditioned Response Theory
या क्लासिकल अनुबन्ध सिद्धान्त
या शास्त्रीय अनुबन्ध

आई.पी.० पवलाव
व्यवहारवाद का
सिद्धान्त

→ आई.पी.० पवलाव एक रूसी वैज्ञानिक थे सन् 1904 में इस प्रयोग के लिए इन्हें नोबेल पुरस्कार भी मिला।

→ स्किनर का कथन - 'सम्बद्ध स्थिति क्रिया एक आधारभूत सिद्धान्त है जिसपर सीखना निर्भर करता है।'

प्रयोग - ① कुत्ता पर प्रयोग किया गया।

② इसमें घण्टी का भी प्रयोग किया गया।

[3] { क्रिया प्रसूत सिद्धान्त / सक्रिय अनुबन्धन सिद्धान्त }
कार्यात्मक अनुबन्धन सिद्धान्त
Skinner's Operant Conditioning } B.F. Skinner
व्यवहारवादी का सिद्धान्त

→ स्किनर ने अपने प्रयोग के लिए जिस मंजूषा का निर्माण किया उसे स्किनर वाक्स के नाम से जाना जाता है।

→ स्किनर ने अधिगम की व्याख्या दो प्रकार के व्यवहारों की व्याख्या की है।

(a) प्रतिक्रियात्मक व्यवहार (Respondent behaviour)

(b) क्रिया-प्रसूत व्यवहार (Operant behaviour)

प्रयोग - ① चूहे, कबूतर पर

② मंजूषा (स्किनर वाक्स) का प्रयोग

[अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त]
[4] { गेस्टाल्ट का सिद्धान्त
(Theory of Gestalt) } → कोह्लर (बर्लिन विश्वविद्यालय)

- इस सिद्धान्त को 'गेस्टाल्ट का सिद्धान्त' भी कहते हैं, इस नियम का प्रतिपादन जर्मनी के गेस्टाल्टवादिगो ने किया था।
- Good (गुड) : → "सूझ वास्तविक स्थिति का आकास्मिक, निष्पक्ष और तात्कालिक ज्ञान है।"
- टोलमैन : → टोलमैन ने सूझ द्वारा सिखना चिन्हों द्वारा सीखना कहा है।

प्रयोग

- कोह्लर ने जिस बनमानूष (चिम्पाजी) पर इसका प्रयोग किया उसका नाम सुलतान था।
- इस प्रयोग में कोह्लर ने, डण्डा, सन्दूक, 6 बेलें का प्रयोग करते हुए, 4 चरणों में प्रयोग पूरा किया।
- अन्तर्दृष्टि के जन्मदाता चार गेस्टाल्टवादी वैज्ञानिक थे।
[बर्देमिर, कुर्ट कोपफ, कोह्लर, कुर्ट लेविन]
- 4 चरण :
 - (1) एक डण्डा
 - (2) दो डण्डा (जोड़कर प्रयोग किया)
 - (3) एक सन्दूक
 - (4) दो सन्दूक (एक के ऊपर एक रखकर प्रयोग)

PLACE FOR 'U'

[B] - [संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त]
[Theory of Cognitive Development]

- (1) - जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
- (2) - लेव सेम्योनोविच विगोत्स्की का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
- (3) - ध्वनर का संज्ञानात्मक आधिगम का सिद्धान्त

[1] - जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
[Jean Piaget's Theory of Cognitive Development]

Sr. No.	विकास की स्थितियाँ या चरण	लक्षण
1	संवेदी-प्रेरक काल (0-2) वर्ष (Sensory-Motor Period)	→ क्रियाओं की पुनरावृत्ति, आत्मकेन्द्रितता की स्थिति → (1) पकड़ना (2) सुनना, → छिपी वस्तुओं को खोजने का प्रयास करता है → वह कारण एवं परिणामों में सम्बन्ध स्थापित करने लगता है।
2	प्राक-संक्रिया काल (2-7) वर्ष (Pre-operational period)	→ आत्मकेन्द्रितता, श्रृंखलाबद्ध केन्द्रविहीन चिन्तन → मानवीयकरण, चिन्ह प्रतीकों में अन्तर स्पष्ट होने लगता है → बीरे-2 इसमें तार्किक गणितीय सम्बन्धों का विषय → अलुफल खेल, पूर्व संकल्पना, भाषा विकास प्रारम्भ
3	मूर्त-संक्रिया काल (7-11) वर्ष (Concrete-operational period)	→ विकेन्द्रिकरण, अविनाशिता, क्रमागत समता, नाकारात्मक, समरूपता, क्षतिपूर्तिकरण, मानसिक पुनर्गठनीकरण → पानी को गढ़ करने की क्षमता बढ़ जाती है।
4	औपचारिक-संक्रिया काल (11 से उपर) (Formal-operational period)	→ अमूर्त तथ्यों पर विचार करने लगता है। → तर्क आधारित आगमनात्मक कल्पनाएँ करने लगता है। → इस अवस्था में किशोर अपने चिन्तन पर भी चिन्तन कर सकता है।

→ विकास के चार निश्चालक चार कारक (Factors)

- 1- बालक की जैविक परिपक्वता (Biological Maturity)
- 2- बालक की क्रिया (Activity)
- 3- बालक पर वातावरण का प्रभाव (Influence)
- 4- संतुलन (Equilibrium) → आत्मसाध (Assimilation), समर्पण (Accommodation)

www.TETForum.com

② विंगोत्स्की का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त Learning Theory of Vygotsky

→ विंगोत्स्की की मान्यताएँ :-

तीन महत्वपूर्ण अवधारणाओं का वर्णन को विंगोत्स्की की संज्ञान विकास थ्योरी के सम्बन्ध में किया गया है।

- 1- बालक की ज्ञानवादी कुशलताएँ केवल उस समय समझी जा सकती हैं जब वह विकासात्मक रूप में विश्लेषण की जाती हैं।
- 2- ज्ञानात्मक कुशलताएँ शब्दों, भाषा एवं संवाद के प्रकार से मध्यस्थ होती हैं। जो मनोवैज्ञानिक यंत्रों की भाँति कार्य करती हैं।
- 3- ज्ञानात्मक कुशलताओं की उत्पत्ति होती है, सामाजिक सम्बन्धों में और सामाजिक संस्कृति पृष्ठभूमि में अंतर्निहित होती है।

Note

- (1) विंगोत्स्की के विचार स्पष्ट रूप से इस बात पर बल देता है कि ज्ञानात्मक कृत्य के सामाजिक स्त्रोत हैं।
- (2) विंगोत्स्की ने शब्दों, भाषा, एवं संवाद को मनोवैज्ञानिक यंत्र कहा है।

→ विंगोत्स्की के अद्वितीय एक प्रभावशाली विचार सीखने और विकास के सम्बन्धों के बारे में प्रस्तुत किये हैं।

[A] - समीपस्थ विकास का मण्डल [Zone of Proximal Development] :- यदि कोई बालक एक नई कुशलता सीख रहा है या नई समस्या हल कर रहा है, तो उसे यदि विशेषज्ञ का साथ तथा सहायता मिल जाती है तो

[B] - पाड़ बाधना [Scaffolding] - यह ऐसी तकनीक है जो सहायता के स्तर में परिवर्तन करने की है। एक शिक्षण के स्तर में एक से अधिक कुशल व्यक्ति (शिक्षक अथवा अधिकृत प्राणी) किमा हुआ बालक सहायी) निर्देशन की मात्रा में अनुकूलन करते हैं। जैसे- जैसे विद्यार्थी की कुशलता बढ़ती जाती है निर्देशन का स्तर कम हो जाता है।

(C) भाषा तथा विचार [Languages And Thoughts]

विंगोत्स्की का विश्वास था कि बालक भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्बन्धों में करते हैं।

- भाषा का प्रयोग आत्म-निगमन के लिए आंतरिक भाषा या निदि-भाषा कहा जाता है।
- विंगोत्स्की के अनुसार- प्रारम्भिक स्तरों पर भी भाषा समाज केन्द्रित है।
- व्यापक ने छोटे बालकों की अँह केन्द्रित तथा समाज से अलग वाणी को महत्व दिया है।

③ ब्रुनर का संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्त Brunerian Cognitive Learning Theory

→ ब्रुनर के सिद्धान्त के सिद्धान्त में प्रमुख रूप से चार प्रत्तिमान के अवयवों का प्रयोग किया जाता है।

- (1) वस्तुओं, व्यक्तियों एवं घटनाओं की पहचान (Recognition of events, things and people)
- (2) उचित रचना कौशल का विश्लेषण करना (Analysis of proper Creative Skills)
- (3) प्रत्ययों का विश्लेषण करना (Analysis of Concepts)
- (4) अभ्यास (Drilling)

→ ब्रुनर की मान्यता - वच्चा एक नग्न बन्दर की तरह नहीं। अपितु संस्कृतियुक्त मानव की तरह है। संस्कृति के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं है।

→ ब्रुनर के अनुसार अनुदेशन (Instruction) सिद्धान्त :-

- (1) ज्ञाता के रूप बालक/व्यक्ति की प्रकृति।
- (2) दिये जाने वाले ज्ञान की प्रकृति।
- (3) ज्ञान-ग्रहण-क्रिया की प्रकृति।

→ ब्रुनर के अनुसार → तीन स्थितियाँ हैं।

- ① अधिनिमग्न (Enactive)
- ② प्रतिभापरकता (Iconic)
- ③ सांकेतिकता (Symbolic)

{ अधिगम के वक्र, पठार एवं सीखने का स्थानान्तरण } Curves, Plateau and Transfer of Learning

वक्र (Curves)

चार्ल्स स्किनर - "अधिगम का वक्र किसी दी गई क्रिया में उन्नति या अवनति का वर्तित काराज पर विवरण है।"

→ "अधिगम वक्र एक पद्धति है जिसके द्वारा हम अधिगम के रूप, आकार, मात्रा को प्रकट किया जाता है।"

→ अधिगम वक्र के प्रकार (Types of Learning Curve)

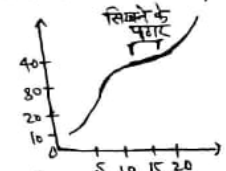
[1]- सख रेखीय वक्र (Straight line Curve) →

यह वक्र सीखने की प्रगति को लगातार बढ़ते हुए व्यक्त करता है। यह वक्र बहुत कम दशाओं में पाया जाता है।



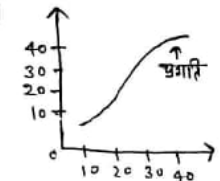
[2]- उन्नतोदर वक्र (Convex Curve) अथवा लघुनात्मक उन्नति सूचक वक्र

इस प्रकार के वक्र में अधिगम की क्रिया में आरम्भ में अधिक प्रगति दिखायी पड़ती है अभ्यास के बढ़ने के साथ-साथ उन्नति की शिथिल पड़ती जाती है और वक्र अन्त में सीधा रेखा (पठार) के रूप में हो जाती है। अधिकतर इसी तरह के वक्र प्राप्त होते हैं।



[3]- नतोदर वक्र या धनात्मक उन्नति सूचक वक्र [Concave Curve or positive Acceleration Curve]

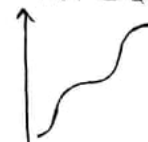
इस प्रकार के वक्र में उन्नति धीरे-धीरे होती है जब सीखने की गति प्रारम्भिक काल में धीमी रहती है। और बाद में सीखने की गति उन्नति होती है, तब जो वक्र बनेगा वह नतोदर प्रकार का होगा।



[4] मिश्रित वक्र या अवग्रहास वक्र

मिश्रित वक्र या अवग्रहास वक्र पृथक् से कोई वक्र नहीं-

होगा वास्तव में यह नतोदर तथा उन्नतोदर वक्रों का मिश्रण मात्र है इस प्रकार के वक्र में प्रारम्भिक दायों में धीमी रहती है फिर तीव्र हो जाती है इसके पश्चात् धीमी और फिर तीव्र हो जाती है।



• प्रारम्भिक गति धीमी → तीव्र गति → धीमी गति → तीव्र गति = मिश्रित वक्र

→ अधिगम वक्र को प्रभावित करने वाले तत्व या कारक

- 1- पूर्वानुभव [Preexperience]
- 2- आभास [Feeling]
- 3- सरल से कठिन की ओर [From easy to complex]
- 4- कौशल [Skill]
- 5- उत्साह [Excitement]

→ वक्र के चढ़ाव और उतार के कुछ प्रमुख कारण →

- 1- उत्तेजना (Excitement)
- 2- अनुकूलन (Adaptation)
- 3- थकान (Fatigue)
- 4- अभ्यास (Exercise)
- 5- प्रोत्साहन (Stimulation)

[अधिगम पठार] [Learning Plateau]

- जब हम कोई नयी बात सीखते हैं तब हम सीखने में लगातार उन्नति नहीं करते। हमारी उन्नति कभी कम और कभी अधिक होती है कुछ समय बाद ऐसा भी अक्सर आता जब हमारी उन्नति बिल्कुल रुक जाती है। जिसे हम अधिगम के पठार कहते हैं जो निम्न वजहों से होता है
- ज्ञानावरोध (Knowledge Limit), प्रेरणावोध (Motivation Limit), एवं शारीरिक क्षमता अवरोध (Psychological Limit) - थकान, अधिक अभ्यास, सिर्फ

→ अधिगम पठार का समय -

होरेन्स - "सीखने की अवधि में पठार साधारणतया कुछ दिनों, कुछ सप्ताहों या कुछ महीनों तक रहते हैं।"

→ अधिगम पठार के कारण [Causes of Learning Plateau]

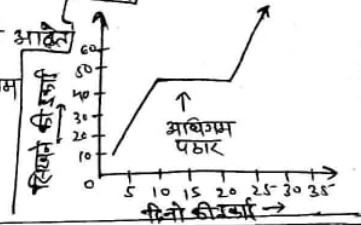
- 1- मनोवैज्ञानिक सीमा
- 2- नकारात्मक कारक
- 3- कार्य की जटिलता
- 4- सीखने की अनुचित विधि
- 5- पुरानी आदतों का नयी आदतों से संघर्ष
- 6- जटिल कार्य के ठेका एक पक्ष पर ध्यान
- 7- अभ्यास का अभाव
- 8- उपयुक्तता न होना

10 - व्यवधान

11 - प्रेरणा का अभाव

→ अधिगम पठारों का निराकरण [Removal of Learning Plateau]

- 1- सीखने के समय का वितरण
- 2- उत्साह के साथ अधिगम
- 3- पाठ्य-सामग्री का संग्रह
- 4- शिक्षण विधि में परिवर्तन
- 5- प्रेरणा तथा उद्वेग
- 6- अच्छी आदतें
- 7- विश्राम



[अधिगम का स्थानान्तरण] [Transfer of Learning]

कालसन्निक (Alanic) :- "शिक्षा के स्थानान्तरण से आश्रय एक परिस्थिति में प्राप्त ज्ञान, आदतें, निपुणता, अभियोग्यता का दूसरी परिस्थिति में प्रयोग करना है।"

→ अधिगम स्थानान्तरण के अर्थ को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

- 1- स्थायी सिखना (Permanent Learning)
- 2- स्थिति का चयन (Selection of Position)
- 3- प्रभाव (Effect)

[अधिगम स्थानान्तरण के प्रकार] [Classification of Transfer of Learning]

- [1]- धनात्मक स्थानान्तरण [Positive transfer] - जब एक परिस्थिति में सीखा गया ज्ञान या क्रिया दूसरी परिस्थिति में ज्ञान या क्रिया को अंजित करने में सहायक सिद्ध हो।
- [2]- वृणात्मक स्थानान्तरण [Negative transfer] - वृणात्मक या नाकारात्मक अधिगम स्थानान्तरण तब होता है जब पूर्व सीखित ज्ञान नवीन ज्ञान के सीखने में रुकावट उत्पन्न करता है।
- [3]- शून्य स्थानान्तरण [Zero Transfer] - जब पूर्व सीखित ज्ञान नवीन ज्ञान सीखने में न सहायता करता है और न रुकावट पैदा करता है तब शून्य स्थानान्तरण होता है।

→ अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त [Principles of Transfer of Learning]

(A) - स्थानान्तरण के प्राचीन सिद्धान्त -

- सीखने के स्थानान्तरण के प्राचीन सिद्धान्त में 'मानसिक शक्तियों के सिद्धान्त' 'प्रतीक और औपचारिक मानसिक परिष्करण' के सिद्धान्त सम्मिलित हैं जिनमें मानसिक शक्तियाँ निम्न हैं। - अवधान, स्मृति, कल्पना, तर्क इत्यादि, स्वभाव, कभी-कभी चरित्र, एवं अन्य गुण।

(B) - स्थानान्तरण का आधुनिक सिद्धान्त :- (amp)

- (1) थार्नडाइक का सिद्धान्त/समरूप तत्वों का सिद्धान्त - थार्नडाइक ने सीखने के प्रयोगों में पाया कि जब व्यक्ती सीखित अनुभवों में से नवीन सीखने के लिए समरूप तत्वों को छोट लेता है और उनका प्रयोग करके शीघ्र सीख लेता है तो इसे समरूप तत्वों का सिद्धान्त कहा जाता है।

- (2) C.H. Judd का सिद्धान्त/समान्यीकरण का सिद्धान्त - आपने सीखने में स्थानान्तरण पर प्रयोग किये और नवीन सिद्धान्त को प्रतिपादित किया इसको समान्यीकरण का सिद्धान्त कहते हैं। बालक को अपने विकास के साथ-साथ विभिन्न अनुभव अजित करता है यह निष्कर्ष निकालते हैं जिसे सिद्धान्त कहते हैं। भविष्य में बालक इन्ही सिद्धान्तों का उपयोग करके जीवन की समस्या सुलझाने में करता है।

- (3) वाग्ले का सिद्धान्त/आदर्श एवं मूल्यों का सिद्धान्त :- सीखने में स्थानान्तरण को बहुत महत्वपूर्ण माना है। समान्यीकरण एवं समान तत्वों के पीछे आदर्श एवं मूल्य माने जाते हैं जो सीखने के स्थानान्तरण को स्पष्ट बनाते हैं। जिनमें बालक के विकास के साथ-साथ उनके आदर्शों एवं मूल्यों का गठन होता है।

→ ★ सकारात्मक अधिगम स्थानान्तरण का शिक्षण ★

- | | |
|-------------------------------|---------------------------|
| 1 - सीखने वाले की तैयारी | 4 - विषय का पूर्ण ज्ञान |
| 2 - उपयुक्त विधियों का प्रयोग | 5 - समान तत्वों का चयन |
| 3 - समान्यीकरण का प्रशिक्षण | 6 - स्थानान्तरण का अभ्यास |

[अभिप्रेरण या अभिप्रेरण] MOTIVATION

- MOTIVATION $\xrightarrow{\text{उत्पत्ति}}$ MOTAM (मोटम) - (मूल या इन्साइट तुम्हें)
- प्रेरणा एक संक्रिया है जो जीव को क्रिया के प्रति उत्तेजित करती या उकसाती है।

MEANING

गिलफोर्ड (Gillford) - "प्रेरणा एक आन्तरिक दशा या कारक जिसकी प्रवृत्ति क्रिया को आरम्भ करने या बनाये रखने में होती है।"

(A) { अभिप्रेरण का व्यापक अर्थ } Wide Meaning of Motivation

- | | |
|----------------------------|-----------------------|
| 1 - प्रेरक (Motive) | (5) - रुचि (Interest) |
| 2 - प्रणोदक (Drive) | (6) - लक्ष्य (Goal) |
| 3 - प्रोत्साहन (Incentive) | |
| 4 - उत्सुकता (Curiosity) | |

(B) { अभिप्रेरण के प्रकार } Types of Motivation

(1) आन्तरिक अभिप्रेरण (Internal Motivation)

- (a) मनो-दैहिक अभिप्रेरण - यह शरीर एवं मास्कुलर से सम्बन्धित है -
जैसे - खाना, पीना, काम, चेहना, आदत, भाव, नेत्र एवं संवेगात्मक प्रेरणा।
- (b) सामाजिक अभिप्रेरण - समाज के वातावरण से ही सीखी जाती है।
जैसे - स्नेह, प्रेम, सम्मान, ज्ञान, पद नेतृत्व एवं यश आदि।
- (c) व्यक्तिगत अभिप्रेरण - इसके अन्तर्गत, रुचियाँ, दृष्टिकोण, स्वधर्म, नैतिक मूल्य, क्रीडा, खेलकूद, प्रतिष्ठा, अभिलाषा, आत्मप्रकाशन आदि।

(2) बाह्य अभिप्रेरण (Extrinsic Motivation)

- (a) दण्ड एवं पुरस्कार (b) स्वयंसेवा (c) लक्ष्य, आदर्श और मोददेश्य प्रयत्न
(d) अभिप्रेरण में परिणति (e) अभिप्रेरण और फल का ज्ञान
(f) पूरे व्यक्तित्व का लगा देना (g) भाग लेने का अवसर देना (h) व्यक्तिगत

[C] - [अभिप्रेरण के स्रोत] (9mp) Sources of Motivation

→ अभिप्रेरण के चार स्रोत होते हैं।

- (1) आवश्यकताएँ (2) चालक (3) उद्दीपक (4) प्रेरक

[D] [अभिप्रेरण की विधियाँ] Methods of Motivation

- | | |
|---|--|
| 1 - रुचि (Interest) | 6 - ध्यान (Meditation) |
| 2 - सफलता (Success) | 7 - खेल (Game) |
| 3 - प्रतियोगिता या प्रतिद्वन्द्विता (Competition) | 8 - सामाजिक कार्यक्रम (Social Event) |
| 4 - सामूहिक कार्य (Group Work) | 9 - पुरस्कार (Prize) |
| 5 - प्रशंसा (Praise) | 10 - कक्षा का वातावरण (Classroom Teaching) |

[E] [अभिप्रेरण के सिद्धान्त] (9mp) Principles of Motivation

- 1 - सांस्कृतिक प्रतिमानों का सिद्धान्त →
- 2 - व्यवहार और सिखने का सिद्धान्त → प्रतिपादक स्किनर (Skinner) हैं।
उद्दीपन अभिप्रेरण का सिद्धान्त
- 3 - क्षेत्रियता सिद्धान्त → प्रतिपादक कर्ट लेविन हैं।
- 4 - मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त → प्रतिपादक विलियम मैकडूगल हैं।
- 5 - मनोविक्षलेषण का सिद्धान्त → प्रतिपादक फ्रायड (Freud) हैं।

[ध्यान की अवधारणा] [CONCEPT OF MEDITATION]

'मन का स्वभाव है कि वह एक स्थान पर स्थिर नहीं होता परिवर्तन एवं चलापमान अवस्था में रहता है, मन के इस विकृत एवं परिवर्तनशील स्वरूप को एक निश्चित बिन्दु पर केंद्रित करने के लिए की ध्यान की अवधारणा का अर्थ हुआ।

MEANING

प्रो. एस. के. दुबे - "ध्यान एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसमें अद्वैतात्मिक एवं भौतिक विकास हेतु मन की स्थिरता एवं रूपायता का विकास किया जाता है जिससे व्यक्ति मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ दृष्टिगोचर होता है।

ध्यान के प्रकार [Types of Meditation]

- 1- आसन
- 2- प्राणायाम
- 3- विचार दर्शन
- 4- विचार स्तवन
- 5- विचार विसर्जन

[ध्यान को प्रभावित करने वाले कारक] [Factors Affecting to Meditation]

[आन्तरिक कारक] [Internal factor]

- 1- आवश्यकता (Need)
- 2- रुचि (Interest)
- 3- लक्ष्य (Goal)
- 4- समझ या समझ (Understanding)
- 5- आदत (Habit)
- 6- मानसिक दृष्टि (Mental Condition)
- 7- पूर्व-ज्ञान (Previous Knowledge)

[बाह्य कारक] [External Factor]

- 1- उद्दीपक की प्रकृति
- 2- उद्दीपक के उद्देश्य
- 3- अवधि
- 4- उद्दीपक की स्थिति
- 5- उद्दीपक की तीव्रता
- 6- विषयता
- 7- नवीनता
- 8- उद्दीपक का आकार
- 9- पुनरावृत्ति
- 10- रूपात्मकता

[रुचि [Interest]]

↳ रुचि (Interest) $\xrightarrow[\text{अंग्रेजी}]{\text{उत्पत्ति}}$ INTERESSE (महत्वपूर्ण होना या लगाव होना)

बी. एन. झा (B.N. Jha) :- "रुचि वह स्थिर मानसिक विधि है जो ध्यान क्रिया को सतत बनाये रखती है।

रुचि के प्रकार (Types of Interest)

[1]- जन्मजात रुचि (Inborn Interest) :- जन्मजात रुचियाँ मूल प्रवृत्तियों पर आधारित होती हैं।

[2]- अर्जित रुचि (Derived Interest) :- जब व्यक्ति के अन्दर किसी वस्तु, विचार या व्यक्ति के प्रति भाव सम्बन्ध उत्पन्न होता है तो वह उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करता है जो धीरे-धीरे रुचि में परिवर्तित हो जाता है। जैसे - खेलना, कला, विज्ञान, साहित्य आदि का विकास

[रुचि परीक्षण] [Test of Interest] - Important

(1) व्यावसायिक रुचि का मापन

→ ① स्ट्रॉंग का व्यावसायिक रुचि प्रपत्र - [1919 स्ट्रॉनफोर्ड विश्वविद्यालय में]

↳ इसमें 420 पद थे बाद में संशोधित करके 291 पद हुए जो 6 क्षेत्रों में मापन में प्रयोग होता है।

- 1- व्यवसाय - 16 पद
- 2- विषय क्षेत्र - 46 पद
- 3- क्रियाएँ - 85
- 4- अवकाशीय ज्ञानविधि - 28
- 5- भाग - 16 पद
- 6- विशेषताओं का मापन - 9 पद

→ ② कूडर प्राथमिकता प्रपत्र परीक्षण -

- (1) व्यावसायिक प्राथमिकता प्रपत्र
- (2) औद्योगिक प्राथमिकता प्रपत्र
- (3) व्यक्तिगत प्राथमिकता प्रपत्र

(2) सामान्य या अल्पव्यवसायिक रुचि का मापन

→ ③ जॉन्स-सूची - मैंगलोन पढ़ना, रेडियो सुनना, खेल-खेलना क्लब जाना। इसमें कुछ चिह्न दी जाती हैं जिनमें 34 पुस्तकें खेल आदि शामिल होती हैं।

→ ④ प्रश्नावली सूची - इसमें प्रश्न-सूची विद्यालय क्रियाओं से सम्बन्धित कुछ पद संकलित किया जाता है जिसके माध्यम से रुचि मापन किया जाता है।

→ ⑤ लेखन कला एवं विचार अभिव्यक्ति के द्वारा

→ (c) बार्टन रुचि-अनुसूची - इसमें 100 व्यावसायिक श्रेणियों का सुझाव है। यह दस सम्बन्धित रुचियों का मापन करती है।
 ① भौतिक ② विज्ञान ③ गणना ④ भाषा-विज्ञान ⑤ प्रशासन ⑥ कला ⑦ संगीत ⑧ अनुभव-आत्मक ⑨ सामाजिक ⑩ उपकार

→ (d) जीस्ट चित्र रुचि सूची - इसमें ग्यारह सामान्य क्षेत्रों में रुचि का मापन करती है।
 ① लिपिक ② यान्त्रिक ③ वैज्ञानिक ④ साहित्यिक ⑤ फल-आत्मक ⑥ नाटकीय ⑦ अनुभव-आत्मक ⑧ संगीतात्मक ⑨ वाद्य ⑩ गणनात्मक ⑪ समाज सेवा

→ (e) स. चटर्जी असायिक प्राथमिकता प्रपत्र - इसमें 150 चित्रों वाले जो निम्न 10 क्षेत्रों में किया जाता है। यह के तीन विकल्प में है जो
 ① कला ② साहित्यिक ③ वैज्ञानिक ④ निमित्त ⑤ कृषि ⑥ तन्त्री ⑦ क्राफ्ट्स ⑧ वाद्य ⑨ खेलकूद ⑩ गृहकार्य

→ (f) आर.पी. सिंह रुचि प्रपत्र - यह रुचि प्रपत्र गिल्फोर्ड की श्रृंखला उपग्रह विधि पर आधारित है।
 (1) भौतिक ② व्यापार ③ वैज्ञानिक ④ खेलकूद ⑤ सामाजिक ⑥ लिपिक ⑦ वाद्य

→ (g) स. पी. कुलश्रेष्ठ व्यावसायिक रुचि प्रपत्र - यह परीक्षण दस व्यावसायिक क्षेत्रों से सम्बन्धित 200 व्यावसायिकों का अध्ययन करता है।

Questions

[स्मृति (MEMORY)] → Important

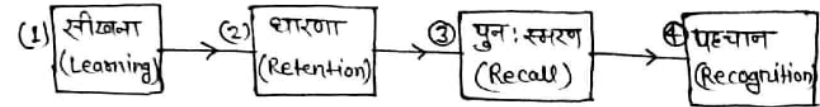
→ जब हम किसी वस्तु को छूते, देखते, सुनते या सूँघते हैं तब 'ज्ञानवाहक तन्तु' उस अनुभव को मस्तिष्क के ज्ञान केन्द्र में पहुँचा देता है ज्ञान केन्द्र में उस अनुभव की प्रतिमा बन जाती है जिसे छाप कहते हैं वास्तव में आ अनुभव का स्मृति चिह्न होती है।

MEANING

हिलगार्ड (Hilgard) :→ "स्मृति वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें अतीत में सीखे-गये ज्ञान, अनुभव या कौशल का पुनः स्मरण किया जाता है।"

[स्मृति के अंग या स्मरण की प्रक्रिया या तत्व] → Important
 PARTS OF MEMORY OR PROCESS OF REMEMBERING

→ WOODWORTH (वुडवर्थ) के अनुसार स्मृति के चार अंग हैं।



[स्मृति के प्रकार] [Types of Memory]

- ① तात्कालिक स्मृति [Immediate Memory]
- ② स्थायी स्मृति [Permanent Memory]
- ③ सक्रिय स्मृति [Active Memory]
- ④ रहस्य स्मृति [Rate Memory]
- ⑤ निष्क्रिय स्मृति [Passive Memory]
- ⑥ मनोवैज्ञानिक स्मृति [Psychological Memory]

[स्मृति की विशेषताएँ या लक्षण] Characteristics of Memory

- 1 - शीघ्र याद होना [Quick Learning] ④ शीघ्र एवं स्पष्ट पहचानना
- 2 - उत्तम धारणा क्षमता [Good Retention] ⑤ अनवश्यक बातों को भूलना
- 3 - शीघ्र पुनः स्मरण [Quick Recall]

[अच्छी स्मृति के प्रभावी कारक] Effecting factors of Good Memory

- 1- आदत का नियम [Law of habit]-
- 2- निरन्तरता का नियम [Law of persistence]
- 3- परस्पर सम्बन्ध का नियम [Law of association of ideas]

(क) मुख्य नियम [Primary Law]

- (a) समीपता का नियम
- (b) समानता का नियम
- (c) असमानता या विपरीत का नियम
- (d) खाँची का नियम

(ख) विचार साहचर्य के गौण नियम [Secondary Law of association of ideas]

- (1) प्राथमिकता का नियम
- (2) नवीनता का नियम
- (3) आदृष्टि का नियम
- (4) स्पष्टता का नियम
- (5) मनोभाव का नियम

[विस्मरण या विस्मृति] FORGETTING

↳ किसी सीखी हुई वस्तु को स्मरण न कर सकना विस्मृति या विस्मरण कहलाती है।

हैबर - "विस्मृति का अर्थ है, किसी अवसर पर प्रयत्न करने पर किसी पूर्व-अनुभव को याद करने या कुछ समय पहले सीखे किसी कार्य को करने में असफलता"।

मन - "ग्रहण किये गये तथ्यों को धारण न कर सकना विस्मृति है।"

[विस्मृति के प्रकार] Types of Forgetting

- (1) सक्रिय विस्मृति - किसी घटना को भूलने के लिए प्रयास करना।
- (2) - निष्क्रिय विस्मृति - जब व्यक्ति किसी तथ्य या घटना को स्वयं भूल जाता है।

[विस्मृति के कारक या कारण] Factor or Cause of Forgetting

(क) सैद्धान्तिक कारण

- (1) वाह्य का सिद्धान्त
- (2) दमन का सिद्धान्त
- (3) अनभिप्राय का सिद्धान्त

(ख) सामान्य कारण

- (1) समय का प्रभाव
- (2) विषय की मात्रा
- (3) विषय का स्वरूप
- (4) सीखने के दोषपूर्ण पद्धति
- (5) मानसिक अभाव
- (6) मानसिक दून्द
- (7) मादक द्रव्यों का सेवन
- (8) मानसिक श्रेण
- (9) प्रत्याह्वान में इच्छा का अभाव
- (10) संवेगात्मक असंतुलन

विषय

[A]- मापन [MEASUREMENT]

Ross (रास) - "मापन एक परिमाणीकरण (अंक) प्रदान करने की प्रक्रिया है।"

गिल्फोर्ड (Gilford) - "निश्चित नियमों के अनुसार वस्तुओं या घटनाओं को अंक प्रदान करना ही मापन है।"

शैक्षिक मापन के स्तर

- S.S. स्टीवेन्स
- | | |
|--|-------------------------------|
| 1 - नामित स्तर (शब्दिक) - इसमें अंकों का प्रयोग किया जाता है। | } मनोविज्ञान में शैक्षिक मापन |
| 2 - क्रमिक स्तर - इसमें रैंक (Rank) क्रम का पता चलता है। | |
| 3 - अन्तराल स्तर - (वास्तविक शून्य बिन्दु नहीं होता है)। | |
| 4 - अनुपात स्तर - (वास्तविक शून्य बिन्दु होता है) → शैक्षिक मापन | |

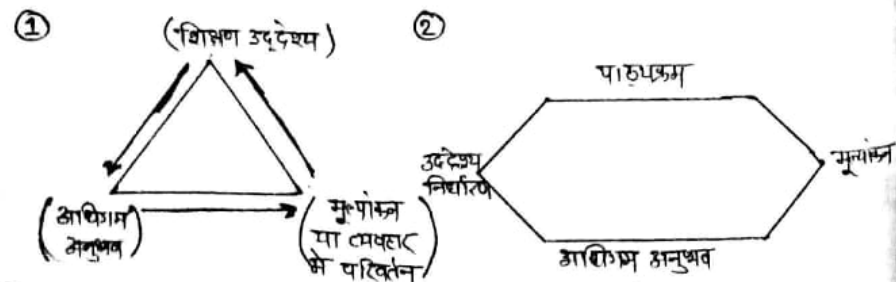
[B]- मूल्यांकन [EVALUATION] - मूल्य + अंक

1. मूल्यांकन के अन्तर्गत किसी गुण, योग्यता या विशेषता का मूल्य निर्धारण किया जाता है, अर्थात् मूल्यांकन द्वारा परिणामात्मक या गुणात्मक दोनों ही प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।

कोठारी आयोग (1964-1966) -

"मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है। यह सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है, और यह शिक्षण उद्देश्य से दृष्टिगत रूप से सम्बन्धित है।"

शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया



चित्र - जान इप्परी अनुसार शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया

चित्र - डा० पटेल के अनुसार (चहमखी प्रक्रिया)

व्यापक मूल्यांकन

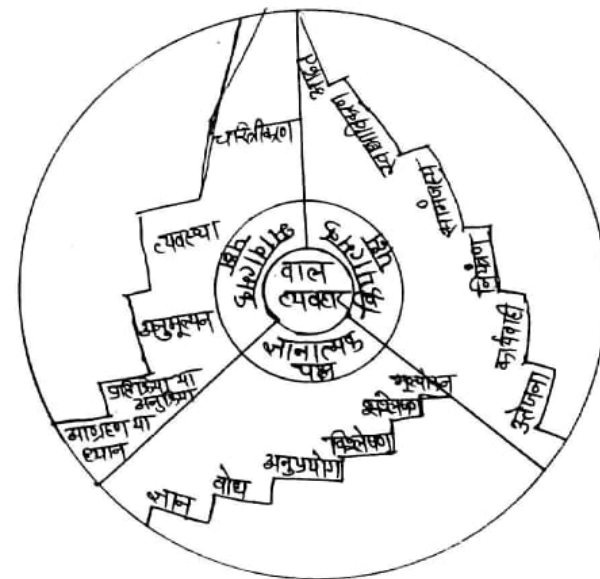
1. बालक के अभिगम को किसी न किसी रूप में प्रभावित करने वाले स्थूल सूक्ष्म, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, ज्ञान, अज्ञान अनेकों पक्ष हैं जिनका मूल्यांकन करना व्यापक मूल्यांकन कहलाता है।

2. व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न पक्ष

[1]- सैद्धान्तिक पक्ष

[2]- भावात्मक पक्ष

[3]- कौशलात्मक पक्ष / मनोक्रियात्मक पक्ष / क्रियात्मक पक्ष



Note

1956 ई० में B.S. Bloom अपनी पुस्तक में 'शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण' (Taxonomy of Education objectives) में शैक्षिक उद्देश्यों के तीन पक्ष बताए हैं।

2. Bloom के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य एक त्रिधुवी प्रक्रिया है।

[क्रियाकलाप विधियाँ]
[ACTIVITY METHODS]

Sr No	विधियाँ (Methods)	जन्मदाता	विवरण
1	आगमन विधि	अरस्तू	
2	निगमन विधि	अरस्तू	
3	प्रश्नोत्तरी/सुकराती विधि	सुकरात	
4	प्रोपेस्ट विधि	फिलिपेंद्रिक	
5	खेल विधि	काल्डवेल कुक	
6	डाल्टन प्लान विधि	डॉ. डेवेल पार्सल्ट	
7	हरबर्ट विधि	हरबर्ट	
8	फिण्डर गाईड	फ्रॉबेल	
9	माण्टेसरी विधि	मरिया माण्टेसरी	
10	संवाद	प्लेटो	
11	ह्यूरिस्टिक विधि	आर्मस्ट्रॉंग	'ह्यूरिस्को' = मैं खोजता हूँ
12	विनेटिका प्लान	डॉ. कार्लटन वाशबर्न	
13	चिन्तो द्वारा सिखना	टालमैन	
14	खेल से पूर्व अभिनय	मालब्रेन्स	
15			

- Note (1):-** कुछ शिक्षा-विदों ने खेल (Play) को बालकों के सर्वांगीण विकास तथा शिक्षण-उपलब्धि के लिए महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया है।
- (2):-** क्रियाकलापों/खेल के विचार को शिक्षा के क्षेत्र में रखने वाला प्रथम शिक्षाविद् काल्डवेल कुक (Caldwell Cook) था।
- (3):-** रूसो (Rousseau) (1712-1778) को इस विचार का ~~प्रारम्भ~~ शिक्षा क्षेत्र में स्थापित करने वाला ~~प्रथम~~ प्रणेता कहा जा सकता है।

[BOOKS BASED ON CHILD PSYCHOLOGY]

Sr No	WRITER	BOOKS	DISCRIPTION (विवरण)
1	जान ड्यूवी (1896)	School or Society स्कूल एक सोसाइटी	प्रयोगात्मक विधि के बारे में है - इसमें कहा गया है - हम कैसे अच्छा सिखाते हैं।
2	B.S. Bloom (1956)	Taxonomy of Education objectives "शैक्षणिक उद्देश्यों का वर्गीकरण"	
3	पिन्सेट	The Principle of Teaching Method	शिक्षा का सिद्धान्त पर
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			

[मूल्यांकन के प्रकार]

मुख्य रूप से मूल्यांकन दो प्रकार का होता है

- (1) परिणामक मूल्यांकन (2) गुणात्मक मूल्यांकन

- (1) परिणामक मूल्यांकन
- (a) लिखित मूल्यांकन
 - (b) मौखिक मूल्यांकन
 - (c) प्रयोगिक " "

- (2) गुणात्मक मूल्यांकन
- (a) साक्षात्कार
 - (b) अवलोकन
 - (c) दस्तावेज
 - (d) आचरण व स्तरमाप

संरचनात्मक मूल्यांकन - शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण के दौरान छात्रों से पूछताछ करता रहता है कि वह छात्र को किसी पाठ को सिखने में सहायता करते हैं और शिक्षण के अन्तिम में सँवर्ण करते हैं। अतः शिक्षक जब कक्षा में शिक्षण करते समय छात्रों द्वारा सिखने वाले छात्रों की प्रतिक्रिया या मूल्यांकन करता है तो इसे संरचनात्मक मूल्यांकन कहते हैं।

(c) **आकलित / योगात्मक मूल्यांकन** :- आकलित मूल्यांकन पाठ्यक्रम के समाप्ति के अंत में यह जात किया जाता है कि छात्रों के द्वारा निर्धारित अधिगम सम्बन्धी उद्देश्यों की प्राप्ति किती हुई। आकलित मूल्यांकन का प्रयोग छात्रों का अधिगम प्रतिक्रिया के स्वरूप में संरचनात्मक प्रमाणन या प्रतीक्षण के लिए किया जाता है। जिसे हम वार्षिक परीक्षा का नाम देते हैं।

(a) **साक्षात्कार** -> संरचित / मानकीकृत साक्षात्कार
-> असंरचित / अमानकीकृत साक्षात्कार

साक्षात्कार के सोपान - ① साक्षात्कार के पूर्व तैयारी ② साक्षात्कार का मुख्य पत्र ③ साक्षात्कार का अंतिम सौफ

(b) **अवलोकन / सर्वेक्षण / सर्वे पद्धति** -> अवलोकन पद्धति से अध्यापक या अर्थ किसी क्षेत्र विशेष का अध्ययन वहाँ के सर्वेक्षण की सहायता से करना है।

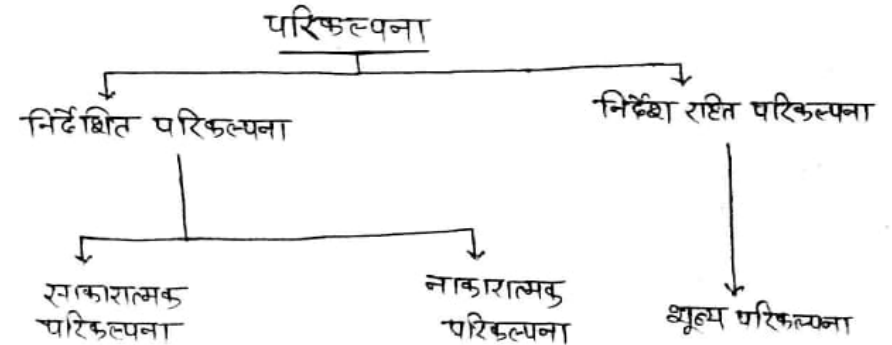
[उत्तम परीक्षण]

उत्तम परीक्षण की विशेषताएँ या प्रमुख कसौटियाँ - 6 प्रकार की हैं

- 1- व्यापकता
- 2- अनुनिष्ठता
- 3- वैधता
- 4- विश्वसनीयता
- 5- मितव्ययिता
- 6- सर्वमान्य

[परिकल्पना] - " पूर्व चिन्तन / प्रस्तावित उत्तर "

"परिकल्पना समस्या का प्रस्तावित उत्तर होता है परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ - पूर्व चिन्तन। समस्या समाधान का पूर्व अनुमान ही परिकल्पना है। समस्या समाधान हेतु परिकल्पना अत्यन्त आवश्यक है परिकल्पना मान्य एवं अमान्य भी होता है।

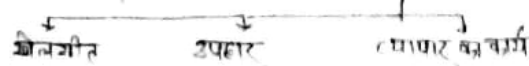


[अभिप्रेरण] - (3m)

- 1. प्रेरणा सीखने के लिए राजमार्ग है।
- 2. अभिप्रेरण के संस्कार - (1) आवश्यकता (2) अन्तर्लोक (3) आत्मज्ञान (4) अभिप्रेरक
- 3. अभिप्रेरण के प्रकार -
 - (a) जन्मजात अभिप्रेरक - भुख, प्यास, विश्राम, निद्रा।
 - (b) स्वभाविक अभिप्रेरक - खेलना, स्तुतिप्राप्ति करना।
 - (c) कृत्रिम अभिप्रेरक - पुरस्कार, प्रशंसा, दण्ड।
 - (d) जैविक अभिप्रेरक - क्रोध, भय, प्रेम।
 - (e) मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक - स्वनात्मक, जिज्ञासा, पलायन।
 - (f) समाजिक अभिप्रेरक - प्रतिष्ठा, सुरक्षा, संग्रह।
 - (g) प्राथमिक अभिप्रेरक - भुख, प्यास, यौन प्रियार, कष्ट।
 - (h) द्वितीयक अभिप्रेरक - प्रतिष्ठा, जिज्ञासा, स्वीकृति।

[1] किंडरगार्टन विधि (Kindergarten Method) - (1782-1852)

- 1. इस विधि के जन्मदाता जर्मन शिक्षाविद् F.A. Froebel (फ्रोबेल) थे।
- 2. इसने Kinder (बालक) तथा Garden (उद्यान) अर्थात् 'बालोद्यान' शिक्षण पद्धति भी कहा जाता है।
- 3. यह विधि अग्र-6 सिद्धान्तों पर आधारित है
 - (1) एकता (Unity) (2) विकास (Development) (3) स्वयं क्रिया (Self-Activity)
 - (4) स्वतन्त्रता (Freedom) (5) समाजीकरण (Socialization) (6) खेल (Play)



[2] माण्टेसरी विधि (Montessori Method)

- 1. इस विधि की जन्मदाता इटली की डॉ. मरिया मांटेसरी [Dr. Maria Montessori] थी।
- 2. इसमें बच्चे और (विशेषकर 3 से 7 वर्ष आयु वर्ग के) विशेष प्रकार की शिक्षा देने का मार्ग प्रशस्त किया।
- 3. इस प्रणाली का मुख्य सिद्धान्त निम्न है -
 - (i) स्वयं विकास का सिद्धान्त [Principle of Self-Development]
 - (ii) स्वतन्त्रता का सिद्धान्त [Principle of Freedom]
 - (iii) आनेन्द्रियों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त [Principle of Sense-Training]
 - (iv) मांसपेशियों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त [Principle of Muscular Training]
 - (v) स्वयं शिक्षा का सिद्धान्त [Principle of Auto-education]

[3] डाल्टन प्लान विधि (Dalton's Plan Method)

- 1. इस विधि के निर्माता का श्रेय अमेरिकन शिक्षाशास्त्री, कुमारी हेलेन पार्क्स (Ks. Helen Parkhurst) को जाता है।
- 2. माण्टेसरी पद्धति के आधार मानकर बड़े बालकों (9 वर्ष से अधिक) के लिए एक ऐसी विधि प्रदान की।
- 3. इसमें बच्चों को निश्चित समय तक कार्य (Definite Work in definite time period) निश्चित समय तक करना होता है।
- 4. इसे प्रयोगशाला योजना भी कहा जाता है।
- 5. यह विधि में निश्चित रूप से सभी स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है साथ ही विशाल्व की ओर समझाए जाते -
 - 1- अग्रोद्यम (Tardancy) 2- अपराध प्रवृत्ति (Delinquency) 3- पिछापन [Backwardness] 4- कामचोर [Shirkers] आदि से बुराकार मिलता है।

4. प्रोजेक्ट विधि [Project Method]

- ↳ इस विधि के जन्मदाता अमेरिका के कोलाम्बिया विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्री (W. H. Kilpatrick) पिसेपेट्रिक को माना जाता है।
- ↳ शिक्षा दार्शनिक जान ड्यूवी (John Dewey) ने अपनी प्रयोजनवादी (Pragmatic Philosophy) में दिया। जिसे पिसेपेट्रिक ने अपनी विधि में बालक को अंशपूर्ण रूप से शिक्षा के रूप में परिभाषित किया है।
- ↳ प्रोजेक्ट पद्धति की कार्य प्रणाली —
 - (i) परिस्थिति उत्पन्न अथवा प्रदान करना [Bringing on a Creating Situation]
 - (ii) प्रोजेक्ट का चुनाव [Choosing of the Project]
 - (iii) प्रोजेक्ट की योजना बनाना [Planning of Project]
 - (iv) प्रोजेक्ट की क्रियान्विति [Execution of Project]
 - (v) प्रोजेक्ट का मूल्यांकन [Evaluation of the Project]
 - (vi) प्रोजेक्ट का लिखना [Recording of the Project]

(5) ह्यूरिस्टिक विधि (Heuristic Method)

- ↳ यह विधि प्रोफेसर आर्मस्ट्रॉंग [Prof. Armstrong] द्वारा दी गई है।
- ↳ जिसमें ह्यूरिस्टिक (Heuristic) का अर्थ "मैं खोजता हूँ" (I discover) के नाम का उपयोग किया जाता है। इसी आधार पर इसका नाम "ह्यूरिस्टिक" दिया गया।
- ↳ बालक प्रत्येक बात की खोज करता-चलता है और इस खोज से प्राप्त परिणामों पर नये सिद्धान्त अथवा नियम को प्रस्तुत करता है।

↳ सिद्धान्त —

- (i) स्व शिक्षा या स्व-अनुभव का सिद्धान्त [Principle of Self-study or Self-experience]
- (ii) क्रियाशीलता या करके सीखने का सिद्धान्त [Principle of Activity or Learning by Doing]
- (iii) प्रेरणा का सिद्धान्त [Principle of Motivation]
- (iv) रुचि का सिद्धान्त [Principle of Interest]
- (v) स्वतन्त्रता का सिद्धान्त [Principle of Freedom]

[6] विनेटिका प्लान [Winnetika Plan]

- ↳ इस विधि का निर्माण अमेरिका निवासी डॉ॰ कार्लटन वाशबर्न [Dr. Carleton Washburn] ने 1919 में किया।
- ↳ इस योजना का प्रारम्भ अमेरिका स्थित इलीनायस राज्य के विनेटिका नामक नगर में किया था इसलिए इसका नाम विनेटिका प्लान पड़ा।
- ↳ इस विधि में बालक के व्यक्तित्व को प्रधानता दी गई है।

सिद्धान्त — 2 मुख्य सिद्धान्त निम्न हैं।

- (i) बालक की क्षमताओं, योग्यताओं और व्यक्तिगत भेदों का सिद्धान्त [Principle of Child's Capacities, Abilities and Individual Differences]
- (ii) बालक के सामाजिक वातावरण का सिद्धान्त [Principle of Child's Social Environment]
 - (a) शिक्षण सामग्री का कार्य - इकाई के रूप में विभाजन।
 - (b) निदानात्मक जाच (Diagnostic Test)।
 - (c) स्व-अभ्ययन व स्वतः रसोद्धान की सामग्री का प्रयोग।

संवेग [EMOTION] ⇒ शब्द इमोवेयर [Emovere] से बना है।

उत्तेजित करना, हलचल मचाना

- ↳ Woodworth (वुडवर्थ) - "संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था है।"

- ↳ मैक्डूगल - "संवेग प्रकृति का इदम है।"

- ↳ मैक्डूगल ने 14 संवेग बताए हैं जो निम्न हैं।

मूल प्रवृत्ति	संवेग	मूल प्रवृत्ति	संवेग
पलायन (Escape)	भय (Fear)	कैप (Submission)	आत्मसमर्पण
मुमुक्षुता (Combat)	क्रोध (Anger)	आत्म गोपित	आत्म-अभिमान
निवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disgust)	सामुहिकता	रुकाकीपन (Loneliness)
संतान की कामना	वात्सल्य (Tenderness)	अपेक्षा की तालमेल	भूख (Hunger)
क्षोभनागति	करुणा (Displeasure)	संयोजन (Acquisition)	अधिकार (Ownership)
काम-प्रवृत्ति (Sex)	कामुकता (Lust)	रचनात्मकता	कृतिभाव
विस्मयना	आश्चर्य (Wonder)	हास (Laughter)	अमोह (Amusement)

संघेपण [Communication]

- संघेपण = सं + घेपण अर्थात् समान रूप से भेजा गया
- Communication $\xrightarrow[\text{अवरोधक}]{\text{उत्पादक}}$ Communicants (कम्यूनिस)
सामान्य बनाना [To make common]
- अतः संघेपण का अर्थ परस्पर सूचनाओं तथा विचारों का आदान प्रदान करना है।

ई.जी. मेयर - "संघेपण से तात्पर्य एक व्यक्ति के विचारों तथा सम्मतिओं से दूसरे व्यक्तियों को परिचित कराने से है।"

संघेपण के सिद्धान्त [Principles of Communication]

- (1) सजगता का सिद्धान्त (Principles of Activeness) :- संघेपणकर्ता (Communicator) तथा संघेपण ग्रहण करने वाला व्यक्ति (Receiver) संघेपण क्रिया में सजग रहते हैं।



- (2) योग्यता का सिद्धान्त (Principles of ability) :- संघेपण क्रिया में यह आवश्यक है कि संघेपणकर्ता और संघेपण ग्रहण करने वाला दोनों योग्य होने चाहिए।
- (3) सहभागिता का सिद्धान्त (Principle of Sharing) :- इसमें संघेपणकर्ता एवं ग्रहण करने वाले दोनों के मध्य सहभागिता होनी चाहिए जिससे संघेपण क्रिया पूरी की जा सके।
- (4) उचित सामग्री का सिद्धान्त (Principle of Proper Content) :- संघेपणकर्ता को उचित सामग्री का ध्यान रखना चाहिए।
- (5) संघेपण माध्यम का सिद्धान्त (Principle of Communication Media) :- संघेपण-कर्ता और ग्रहण के बीच संघेपण की कमी को जोड़ने के लिए एक माध्यम होता है। जैसे दो श्रृंखला (Loop) के बीच बारा प्रवाहित करने के लिए विद्युत तार होता है।
- (6) पृष्ठपोषण का सिद्धान्त (Principle of feed back) :- संघेपण क्रिया में संघेपणकर्ता को संघेपण के बारे में उचित पृष्ठपोषण (Feed Back) प्राप्त होता

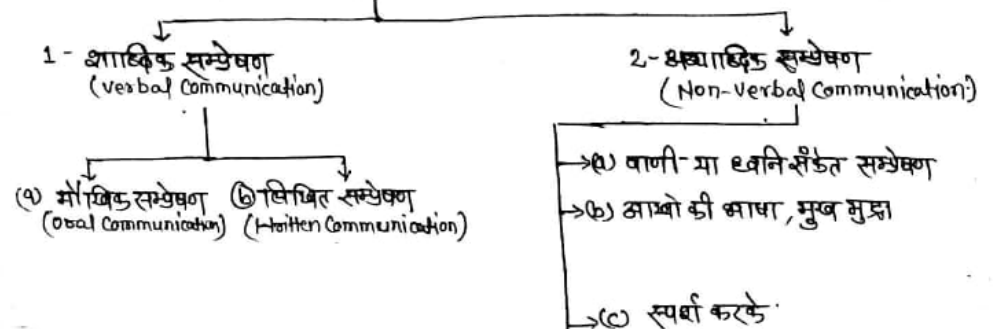
है तो। संघेपण अधिक प्रभावशाली होता है।

- (7) सहायक एवं बाधक तत्वों का सिद्धान्त (Principle of facilitators and barriers) संघेपण क्रिया में ऐसे तत्व और परिस्थितियाँ कार्य करती हैं जो सहायक या बाधक भूमिका निभाने से सुरुं ६ जुड़ जाती हैं जैसे- शोर गुल प्रकाश की कमी, सुनने देखने में आने वाली कमी।

संघेपण के घटक [Components of Communication]

- (1) घेपणकर्ता (Sender) (2) संघेपण प्राप्तकर्ता (Receiver) (3) पृष्ठपोषण (feedback)
(4) संघेपण सामग्री (Communication Component)

संघेपण के प्रकार [Types of Communication]



प्रभावी संघेपण के तरीके

- ① उद्देश्यपूर्ण ⑨ स्थिति की भावना का विवेक
② निर्देशनात्मक ⑩ पाठ की तैयारी
③ प्रेरणास्पद ⑪ पूर्वज्ञान से सम्बन्धित
④ ताल केन्द्रित ⑫ सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग
⑤ सुनियोजित ⑬ स्वतन्त्र वातावरण पर आधारित
⑦ सक्रिय आस्था ⑭ आत्मविश्वास की जागरूकता
⑧ प्रसन्न विषयवस्तु ⑮ आश्वासन प्रदान करना चाहिए

संघेपण की रुकावटें

- ① शक्ति का अभाव
② संघेपण सामग्री की कमी
③ संघेपण माध्यम की कमियाँ
④ भाषा की कमी
⑤ प्राप्तकर्ता सम्बन्धी कमियाँ
⑥ वातावरणजन्य कमियाँ

शिक्षण के सिद्धान्त [Principles of Teaching]

प्रश्न 1) शिक्षण का सूत्रमूल सिद्धान्त है। - आगमन विधि का सिद्धान्त

शिक्षण सिद्धान्त	विवरण (Description)
1) प्रियाशीलता या करुण सीखने का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार अध्यापक के लिए छात्र का प्रियाशील होना उनके अध्ययन में सहायक है।
2) अभिव्यक्ति का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक और छात्र दोनों ही अभिव्यक्तिपूर्ण कार्य करते हैं परस्पर प्रयोग प्रभावकारी होते हैं।
3) कृति का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षण कार्य करते समय सर्वप्रथम छात्रों की कृति का पूरा लगना चाहिए और इसकी का विकास करना चाहिए।
4) निश्चित उद्देश्यों का सिद्धान्त	उद्देश्यों का निश्चय करना शिक्षण का प्रमुख सिद्धान्तों में से एक है। उद्देश्य ही शिक्षण प्रक्रिया को दिशा प्रदान करते हैं।
5) नियोजन का सिद्धान्त	जब अध्यापक पढ़ाई सामग्री का चयन-युक्त करने के लिए सम्बन्धित तरीके से तब तब का निर्माण करता है। यह प्रक्रिया - पढ़ाई करना, समझना, समझना का प्रयोग।
6) चयन का सिद्धान्त	छात्रों के मानसिक परिपक्वता, निर्धारित उद्देश्य, शिक्षक बुद्धिमत्ता, सम्भाव्यता तथा साधन सुविधाओं को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का चयन करना चाहिए।
7) व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त	छात्रों व्यक्तिगत विभिन्नताएँ जैसे - बुद्धि, स्वभाव, क्षमता, रुचियाँ एवं प्रभावण के आधार पर शिक्षण कार्य की व्यवस्था करना चाहिए जिससे की उच्च वचने परेक्षण न हो।
8) लोकतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त	लोकतन्त्रीय प्रणाली में शिक्षक गिर, दार्शनिक एवं मार्गदर्शक के रूप में व्यवहार करता है जिससे छात्रों की स्वचिन्ता, तर्क, मनन तथा निर्णय का अवसर मिलता है।
9) जीवन में सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त	जीवन विद्यालयों की दृष्टि से जीवनोपयोगी हो अथवा जिससे व आसानी से उलाने जान या समझ लिया है उसे माध्यम से विषयवस्तु को समझाया जाय तो वह सखता से सीखा जायगा।
10) आवृत्ति का सिद्धान्त (Principle of Repetition)	यदि याद किये गये पाठ को कुछ समय पश्चात पुनः पढ़ लिया जाय तो पाठ अच्छी तरह से याद हो जाता है। अतः आवृत्ति का सिद्धान्त भी महत्वपूर्ण है।
11) निर्माण एवं मनोरंजन का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षण कार्य इस ही से करना चाहिए कि छात्र जान आनंद करते समय स्वाभाविकता प्रकृतता अनुभव कर सकें। अतः शिक्षण कार्य - खेल गीत, विचार विमर्श।
12) नियोजन का सिद्धान्त	इसके लिए पाठों को छोटी-छोटी इकाइयों में पाठ प्रेषण की सखता एवं सुविधा की दृष्टि से विचार लेना चाहिए।

शिक्षण के आधुनिक आधारित विशिष्ट सिद्धान्त [Learning Based Specific Principle of Teaching]

विशिष्ट सिद्धान्त	विवरण (Description)
1) आत्मीयता का सिद्धान्त (Principle of Rapport)	आत्मीयता से आरम्भ है - शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य आत्मगत या व्यक्तित्व की भावना से भरे सम्बन्ध। तब छात्र की रुचि दिचाहट दूर हो तथा सर्वोच्च किये कि शिक्षण कार्य आसानी से हो।
2) स्वाभाविकता क्रम का सिद्धान्त (Principle of Natural order)	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए की पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु का सम्बन्ध पीछे की या आगे की विषयवस्तु से न हो तो ही उनके क्रम का ध्यान रखना चाहिए जैसे - गुणा। अलग पढ़ाने से पहले छात्रों को पढ़ाया जाय।
3) अन्तः क्रिया का सिद्धान्त (Principle of Interaction)	शिक्षक व शिक्षार्थी सादृश्यता अथवा मूल्यवान किसी भी दृष्टि से जो प्रश्न पूरे इसका अन्तर विद्यार्थी स्मृति अथवा चिन्तन के आधार पर है इसे माध्यम शिक्षार्थियों द्वारा पूरे गये प्रश्न अथवा उनकी रुचियों और समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षक उसका उत्तर देने तथा सम्झने का प्रयास करे गी और प्रयास।
4) विश्लेषण एवं संश्लेषण का सिद्धान्त (Principle of Analysis and Synthesis)	पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के न होने के कारणों तथा निष्कर्षों को खण्ड-खण्ड करके पता लगाना (Analysis) विश्लेषण कहा जाता है तो इन सभी कारणों को संगठित रूप में दूर करने का प्रयास करना संश्लेषण (Synthesis) है।